॥ श्रीः ॥

# श्रीमञ्जुरसाष्टयाम

[ मंत्रार्थ तथा शरीर--विवरण सहित ]

श्रीअयोध्या-सद्गुरुसदन-निवासि-महात्मा
अनंत श्रीस्वामी रामवल्लभाशरणजी के
शिष्य **श्रीश्रीकान्तशरणजी** कृत
विविध छंदों एवं समयोचित राग-
रागिनियों में श्रीसीतारामजी
की मानसिक पूजाविधि ॥

लेखक और प्रकाशकः-

**श्री श्रीकान्तशरणजी**

सद्गुरु कुटी, गोलाघाट, श्रीअयोध्याजी।

द्वितीय संस्करण    निछावर ०.७५ पै०

सन् १९६९ ई०

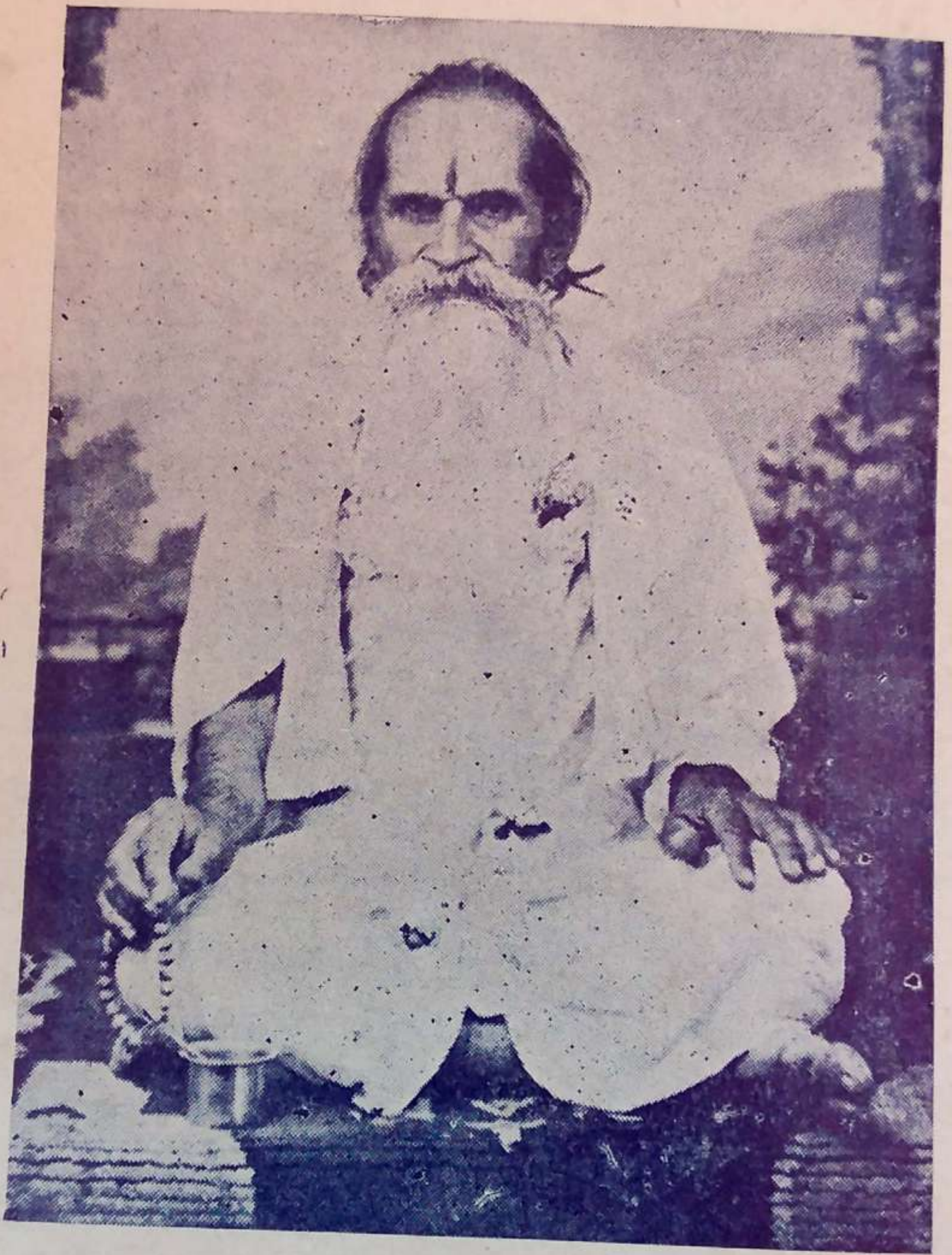

श्री श्रीकान्तशरणजी

सद्गुरुकुटी, गोलाघाट श्रीअयोध्याजी ।

Scanned by CamScanner

॥ श्रीः ॥

# श्रीमञ्जुरसाष्टयाम

[ मंत्रार्थं तथा शरीर--विवरण सहित ]

श्रीअयोध्या-सद्गुरुसदन- निवासि-महात्मा
अनंत श्रीस्वामी रामवल्लभाशरणजी के
शिष्य **श्रीश्रीकान्तशरणजी** कृत
विविध छंदों एवं समयोचित राग-
रागिनियों में श्रीसीतारामजी
की मानसिक पूजाविधि ॥


लेखक और प्रकाशकः-

**श्री श्रीकान्तशरणजी**

सद्गुरु कुटी, गोलाघाट, श्रीअयोध्याजी।

द्वितीय संस्करण सन् १९६६ ई० निछावर ०.७५ पै०

Scanned by CamScanner

ॐ नमोगुरुभ्यः

# उपोद्घात

भगवान् की प्राप्ति मनुष्यमात्र का चरम लक्ष्य है, वह शास्त्रों में ध्यान, निदिध्यासन तथा चिन्तन द्वारा कही गई है । 'ध्यैचिंतायाम्' धातु के अनुसार होने से तीनों शब्द पर्यायी हैं। इसी से अन्तःकरण शुद्ध होता है, यथा-श्रुतिः 'भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः । क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरें' ।। ( मुंडको० ) उपासना की रीति से भगवान् का चिन्तन उनके धाम और क्रीड़ा समेत किया जाता है और इसीसे चञ्चल मन की स्थिति एवं शुद्धि होती है, क्योंकि धाम भी भगवान् का शरीर तथा नित्य स्वयं प्रकाश एवं सच्चिदानन्द रूप है । वहाँ की सभी वस्तुएँ सच्चिदानन्द रूप हैं । यथा—'रामस्य नाम रूपञ्च लीला धाम परात्परम् । एतच्चतुष्टयं नित्यं सच्चिदानन्दमव्य-यम् ।।' ( वशिष्ठसंहिता ) इस चिन्मय विहार में लगती हुई मन की प्रारब्धजन्य संकल्पै चिद्रूप होती जाती हैं। जैसे इन्द्र की जल-सम्पत्ति भगवान् के घोवर्द्धन-लीला में समाप्त हुई । तब वह शरण हो कृतार्थ हुआ । वैसे ही यह मन भी इस चिन्तन सहित आयु समाप्त कर कृतार्थ होता है । यथा—'यं यं भावं स्मरन्वापि त्यजत्यन्ते कलेवरम् । तं तमे-वैति कौन्तेय सदातद्भावभावितः' ( गीता अ० ८ ) यही चिन्तन 'मानसिक भावना अष्टयाम्' के नाम से कहा जाता है । यह भावना दास्य, सख्य, वात्सल्य तथा शृङ्गार रस के रूप में की जाती है। इन भावों की रीतियों में कुछ-कुछ भेद भी होता है। तिनमैं यह ग्रन्थ

Scanned by CamScanner

शृङ्गार भाव का है । अतः इसका नाम 'मञ्जुरसाष्टयाम' है, क्योंकि मञ्जु, उज्ज्वल आदि इसी के पर्याय हैं । यथा—'शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वल इत्यमरः, इस रस के रामाष्टयाम तथा सीतारामरहस्य आदि ग्रन्थ श्रीअवध में प्रसिद्ध हैं । इसके छन्द यथामति पिंगल की रीति से हैं और पद भी सेवा के समय समय की तथा अष्टकालिक राग-रागनियों में हैं । इसमें सुखोच्चारणार्थ श्रीगोस्वामीजी आदि की रीति से श, क्ष, ण आदि की जगह क्रमशः स, छ, न आदि वर्णों का ही प्रयोग हुआ है ।

पुनः 'मननात्त्राणनान्मंत्रः, इस श्रीरामतापनीय श्रुति के अनुसार मन्त्र जब अर्थानुसन्धान-पूर्वक मनन सहित जपा जाता है, तब उसके अधिष्टातृ देवता के गुणों का ज्ञान होता है और उसमें प्रीति दृढ़ होती है तब चित्त लोभाया हुआ लगा रहता है और पवित्र होता हुआ घृणित विषयों की ओर नहीं ताकता । तथा मन्त्र से प्रकटे हुए इष्ट गुण, अनुसन्धान से रक्षा करते हैं, तब निर्वाध होकर चित्तबृत्ति इष्ट में लगी रहती है । अतः इस अष्टयाम भावना का सहायक जान, बृहद् मन्त्रार्थों का सार रूप सूक्ष्म राम मन्त्रार्थं भी साथ में दिया है । मन्त्रार्थ की प्रथा रहस्यत्रय रूप में लिखने की है, इससे वह भी सूक्ष्म में ही दे दिया गया है ।

स्थूल, सूक्ष्म और कारण रूप तीनों शरीरों से जब जीव की बृत्ति पृथक् होकर तुरीय में स्थित हो, तब भावना यथार्थरूप में होती है । आजकल शिष्यों को संबंध देते हुए प्रायः लोग इनका नाम मात्र ही बतलाते हैं, जिससे साधक कितने वर्षों तक जैसी तैंसी भावना में मत्थापच्ची करते हुए भी सुख-शान्ति नहीं पाते और हताश होकर कहने लगते हैं कि भाई ! यह सतयुग का साधन है, इस कलि में ध्यान नहीं जमता । अतः 'साधन करिय विचार हीन मन शुद्ध होय नहिंतैसे' (विनयपत्रिका)

Scanned by CamScanner

इस श्री गोस्वामि वचनानुसार उक्त त्रुटि निवारणार्थ "शरीरों का विवरण" भी ग्रन्थ के साथ में दिया है। जिसके निर्माण में बहुत श्रम होने से भी यदि कुछ सफलता हुई है तो वह श्रीसीतारामजी की कृपा का प्रसाद ही है।

त्रुटि रह जाना मानव--स्वभावतः सम्भव है; अतः क्षन्तव्य है। यह ग्रन्थ श्रीसीताराम कृपा से ही इस दीन मतिहीन द्वारा सम्पादित हुआ है; अतः आशा है कि सारग्राही सज्जनों को प्रिय होगा, जिससे मेरा श्रम सफल होगा।

विनीतः—

**श्रीकान्तशरण**

**श्रीसद्गुरुकुटी, गोलाघाट अयोध्या।**

Scanned by CamScanner

ॐ नमोगुरुभ्यः

श्रीमते रामानन्दायनमः श्रीसीतारामाभ्यांनमः

# ❀ अथ मञ्जुरसाष्टयाम ❀

दो०—वन्दौं श्रीसतगुरुचरन, मन-वच-काय सप्रेम ।
जासु कृपा करवर हरनि, करनि सुमङ्गल छेम ॥१॥

सश्याम छप्पय

वन्दौं श्रीगुरुदेव प्रनतजन सोक–नसावन ।
नित्य–अवध वरवास रहसि मिसि प्रगट करावन ॥
प्रनवौं चन्द्रकलादि प्रमुख सखि महल–निवासिनि ।
जिनकी कृपा कटाक्ष कामसुरभी सियदासिनि ॥
वन्दौं पुनि सिय–पिय-चरन, नाथ ! ढरहु करुना-दृगनि ।
देहु सुमति जेहि कहउँ तव, अष्टयाम-सेवा वरनि ॥ २ ॥

( इति मङ्गलाचरण )

अथ धामवर्णन—मत्तगयंद छन्द ( सवैया )

पाद[1] चतुष्टय ब्रह्म विभूति चतुर्थ में प्राकृत लोक बखानी । सेष त्रिपाद है नित्य विलास सुऔध लसै तहँ की रजधानी ॥ रत्नमयी बहु भौन तहाँ

---

नोटः—१—पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ।
( पुरुषसूक्त )

Scanned by CamScanner

रहहीं नित जीव सुवेद–प्रमानी । कल्पतरू तर बञ्चन भौन रमैं सिय राम तिन्हैं सुखदानी ॥ ३ ॥

घनाक्षरी ( कवित्त )

द्वादस विपिन दिसि बिदिसि विराजत हैं, चहूँ ओर सिंहपौरि प्रति हाट राजहीं । सात कच्छ आवरन भूमि रंग न्यारे न्यारे, विविध प्रकार के विलास साज भ्राजहीं । मधि रँगभवन में सियपिय सैन ऐन, आसपास कुञ्जन में आलियाँ विराजहीं । यामिनी के पाछिले पहर सखि जागि जागि, दंपतिहिं ध्याय ध्याय गावै मृदु साजहीं ॥ ४ ॥

## अथ प्रथमोयामः

ध्वनि परज तालधीमा

अनुपम है छवि सिया पिया की । राजहिं कनक पलँग के ऊपर, श्याम गौर घन ज्यों पटला

---

नोट—१—मन्त्र—"स नोबन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा । यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीयेधामन्नध्यैरयन्त" ( यजु० अ० ३२ ) ॥

अर्थः—वह ईश्वर हमारा बन्धु है, विधान कर्ता है, पिता है वैकुंठादि धाम, स्वर्गादि भुवन, सब जानता है जिस तीसरे वैकुण्ठ साकेतादिधामों में देवता अर्थात् दिव्य पार्षद सब अमर होकर विहरते हैं ॥

Scanned by CamScanner

की। स्याम-गौर-मिलि हरित-रंग कीं, प्रभा विराजति अद्भुत झाँकी । कोटि अनंगरती छवि वारति, मञ्जु निहारति मति-गति थाकी ॥१॥

दोहा

संग सहेलिन सह उठीं, सखी सकल मुख धोय।
उबटि मज्जि सिंगार पुनि, कर समास सब कोय ॥ २ ॥
रसाचार्य आचार्य—पद, पूजि प्रेम स उमंग।
पाय सु आशिष यान चढ़ि, चलहिं सयन-गृह संग ॥ ३ ॥
सयन-भवन के द्वार पर, उतरि युगल सखि भेंटि।
मंगल साज समाज सह, पहुँचीं पलँग सहेटि ॥ ४ ॥
वसु-–वसु श्री यूथेश्वरी, दोउ दिसि लीन्हें साज।
षोड़स बत्तिस चौसठिन, मंगल थार विराज ॥ ५ ॥
साज बजावहिं गावहीं, भैरव आदि सुराग।
नुपुरन मंजु जगावहीं, नृत्यहिं, भरि अनुराग ॥ ६ ॥

---

नोट—१—घनाक्षरी :—साड़ी आँगी पायताबा यावकहु राग सब, तिलकादि सजि भूपनहुं इमि धारहीं । नूपुर सुपायजेब किंकिनि सुमुद्रिकान, कंकन बलय बाजुबन्द अंगतारहीं । दुलरी सु पञ्च-लरी नासामनि बेसरिहुं, कर्नफूल सीसफूल बन्दि अनुसारहीं । केस में फुलेल लाय गुँथवाय सेंदुरहुं, अम्बक सु आँजि गुरु--पूजन सिधारहीं ॥ १ ॥

Scanned by CamScanner

राग भैंरव

अब जागो जागो जागो सीय पीय । टेक—दीपसिषा भइ अरुन विलोको, चक्रवाक मुद हीय हीय ॥ पीय पीय पिय सारिक बोलत, सुघर कीर कह सीय सीय ॥ मागध सूत बदत बिरुदावलि, मंजु जयति जय जीय जीय ॥ ७ ॥

रागिनी भयरवी

सीय पिय जागहु होत अवारो । टेक—सिंहपौरि पर नौबत बाजति, परिजन चहत जुहारो ॥ अनुज सखा सब ठाढ़ दुवारे । द्विजवर निगम उचारो ॥ भीतर तव दरसन की प्यासी । आलिन वृन्द अपारो ॥ मंजुकमल दल खिलन चहत अब, मधुकर करत गुञ्जारो ॥ ८ ॥

सुन्दरी छन्द ( सवइया )

विलसे निसि सुन्दर सेज पै जागत, राजत लोचन आलस माते। रसमग्न परस्पर प्रेम पगे गलबाँह दिये अनुरागि बताते। पियभाष प्रिया हौं प्रियाहु पिया हौं दोऊ दिसि प्रेम उमंग बढ़ाते। तब मंजु सम्हारि सुअंगज आलिन भूषन वस्त्र सजे दोउ गाते ॥ ६ ॥

Scanned by CamScanner

तोटक छन्द

कबहूँ पिय जागि जगाव प्रिया । कर पर्सत अंग हटाव भिया । निज वारत पेखत रूप अरे । सिय जागि पिया लखि अंक भरे ॥ १० ॥

दोधक छन्द

प्यारि हु प्रीतम अंक लगावें । मोद भरे रस बात बतावें । श्याम रु गौर सुअंग सुहावें । मंजुलता सखियाँ बलि जावें ॥ ११ ॥

दोहा

तब सखि परदा पलँगकर, दीन्हेउँ तुरत उठाय ।
मंजुलता मनि कोपशनि, छाया दर्स कराय ॥१२॥
पग प्रक्षालि मुख धोय युग, मंगल थार देखाय ।
छत्र चँवर आदिक सुसजि, आरति करि सिरनाय ॥१३॥

भुजंगप्रयात छन्द

चले श्रीप्रिया के गहे हस्त नालें । उनींदे जम्हाते निरालीहि चालें ॥ दुहूँ ओर आलीन दे अंकमालें । विलोकैं अलीपुञ्ज होवें निहालें ॥ १४ ॥

सो०—पहुँचि सुवल्लभ कुंज, सुवरन चौकी बैठकर ।
सौंज लिये अलिपुञ्ज, करहिं प्रभाती लाल ललि ॥१५॥

रागिनी भैरवी

करत परभाती प्रीतम प्यारी । टेक—कोमल ललित सुरभि लतिका की, कूँची दुफल सँवारी ॥ कोउ सखि

कोमल पट कर लीन्हें, कोऊ कंचन झारी । हाथ धोवाय अँगोछि सु पट सों, पट नवीन तन धारी ॥ मंजुलता सिंहासन राजे, भूषनादि सिंगारी ॥ १६ ॥

दोहा

अगर दीप मधुपर्क करि, वल्लभ भोग सजाय ।
युगल थार धरि बैठकिन, पावत दोउ भरि चाय ॥१७॥

रागिनी भैरवी ताल धीमा

रसिक दोउ पावत भोग सुहाते । टेक—पेड़ा बरफी कन्द जलेबी, रसगुल्ला सरसाते ॥ निमकी आदि पाक फलहारी, फल मेवादि जहाँते । पगे परस्पर प्रीति रीति दोउ, पावनि रहसि बढ़ाते ॥ मंजुलता सखि आनन्द लूटति, नटत बजाते गाते ॥ १८ ॥

दोहा

पय पवाय आचमन पुनि, पान और इतरादि ।
मंजुमाल परिराय सखि, आरति करि अहलादि ॥१६॥

इति श्रीमञ्जुरसाष्टयामे निशाऽन्ते द्वितीय प्रहर कैङ्कर्य वर्णने प्रथमोयामः समाप्तः ॥ १ ॥

---

नोटः—१—घनाक्षरीः—प्रिया को सिंगार लघु आलिन की भाँति कछु, स्वामिनी के भाव की विशेषता विचारिये । प्रीतम के अलक फुलेल लाय फूल गूँथि, अंगराग रचि माथ तिलक सँवारिये । पीतपट धोती जूती पायताबा रितुरुष, ताज नासामनि बाली अंगद सुधारिये । हस्त कड़ा मुद्रिकाहु किंकिनि सु पगकड़ा, मंजुछत्र चँवरादि साजि प्रान वारिये ॥ १ ॥

Scanned by CamScanner

# ❋ अथ द्वितीयोयामः

भुजंगप्रयात छन्द

चले मज्जनागार बाजीनयाने । अनेकों रथों पै सखी बेप्रमाने । दुहूँ ओर कुञ्जान की आलि पुंजैं । झरैं फूल जल्लूसकै जैति 'गुंजैं ॥ १ ॥

दोहा

मज्जन कुञ्ज अधीश्वरी, करि आरती जोहारि ।
भेंट राखि विनती करी, चले फरस पग धारि ॥ २ ॥

नाराच छन्द

तहाँ विसाल कुण्ड के चहूँ दिसान घाट हैं । प्रत्येक मध्य बाँगले सु उब्टनादि ठाट हैं ॥ सलील बीच चौदिसा अनेक गुप्त कुञ्ज हैं । प्रत्येक कूल बेलि युक्त खंभ तेजपुञ्ज हैं ॥ ३ ॥

दोहा

थम्भन पै मनिपत्र की, छाजनि अति कमनीय ।
चित्ररु झाड़फनूस की, छबि ऊपर रमनीय ॥ ४ ॥
बँगले मधि चौकी सजी, पिय प्यारी आसीन ।
सुरभित उबटन करत अलि, मंजु प्रवीन प्रवीन ॥ ५ ॥
सो छबि उघरे वदन की, निरखहिं अलि बड़ भागि ।
ले प्रसाद उबटहि बहुरि, निज-निज तन अनुरागि ॥ ६ ॥
निकट कूल जुरि एक सुठि, झूला महँ दोउ मीत ।
मज्जहि संख सहस्र लख, धारन वारि पुनीत ॥ ७ ॥

Scanned by CamScanner

सुरभि उष्ण सीतल सलिल, रितु रुख मृदु मलिन्हात।
सखि नहात क्रीड़हिं लखहि, मन्द मन्द मुसुकात ॥ ८ ॥

अनंगशेषर छन्द

चले सु कुण्ड मध्य दोउ आलियाँ निहारते, अनेक तैरती फिरैं सु गेंद को उछारते। अनेक खेल फूहियाँ छिपैं अनेक डूबियाँ, सुभाँति भाँति की कला बनै नहीं उचारते ॥ सुनैन मैन की कटाच्छ लाल मारि बाल पै, सु कंज पुष्प आलियाँ हनी प्रिया कि वार ते। दोऊ सुटोल जंग देखि एक हू न हारते, सु दम्पती छिपे तो डूबि ढूँढ़ती मँझारते ॥ ९ ॥

दोहा

तहँ प्रति कुञ्जन देखहीं, क्रीड़ा विविध प्रकार।
साजि सकल सुख दम्पती, सह प्रगटहिं मँझदार ॥१०॥
कबहुँ पुष्प जंगहिं बढ़त, दौऊ दिसि अतिरारि।
सिय सखि प्रीतम टोल से, जाय फिरै हुसियारि ॥११॥
प्रीतम जब आवें इतै, छल बल करि पकड़ाय।
सिय ढिग हाथ जोड़ाय अलि, छोड़हिं हारि भषाय ॥१२॥
पुनि तट चौकी दम्पतिहिं, अँगबछि पट पहिराय।
निकट कुञ्ज में सात्विकी, लघु सिंगार कराय ॥१३॥

शिखरिणी छन्द

चले यज्ञागारे, लसहिं सखियाँ मन्दगमना। करैं

Scanned by CamScanner

पूजा संध्या, हवन करि दै दान कम ना। चढ़े याने सोहैं, गमन किय सिंगारसदना। अनेकों कुञ्जों के, सुमधि विलसत्पीठ कुँदना॥ १४॥ विराजे सिंगारैं, अलिन जुरि लै बस्त्र गहना। सजी आली आवैं, जुरहिं समुहें मध्य सहना। लखैं वस्त्राभूषैं[1][2], ध्यजन चँवरो छत्र चँदना। करैं धूपैं दीपैं, सजहिं वर नैवेद्य वँदना॥ १५॥

---

१—दोहा—पैदाबा लहँगा ललित, साड़ी आँगी साल। पुष्प ऊन पट सूत के प्रियहिं धार, लखि काल॥ १॥ पैताना धोती ललित, जामा उपरन साल। पुष्प पटादिक काल लखि, जूताहू सजु लाल॥ २॥

२—रूपक मनहर छन्द (घनाक्षरी रूप)—प्रिया जू के नूपुर सुपायजेब पग कड़ा, कटिसूत्र करधनि किंकिनी ललित जोह। मुद्रिका सुकंकन बलैं पछेल कर लसै, बाजुबंद अंगद रु जोसन प्रभा-सँदोह॥ कण्ठसिरी दुलरी सु पञ्चलरी ग्रीवकली, पदिक हमेल चन्द्रहार फूलमाल मोह। नासामनि बेसरि सु नथ कर्नफूल ढार, सीसफूल बंदि चन्द्रिका सु चूड़ामनि सोह॥ १॥

प्रीतम के कीट कल कुण्डल सु नासामनि, कण्ठा पीत दुलरी पदिक हार मुक्तमाल। गोपमनिजालमनि मोहनरु बनमाल, अंगद बिजायट अनन्त पहुंची बिसाल। धनु तून ❀ असि

---

❀ ये चारों शृङ्गारांग भी हैं, सूक्षमभाव से रह सकते हैं; यहाँ तो सरकार को बाहर जाना है इससे चाहिये ही, सदा कुञ्जों के भीतर नहीं भी धारण करते जैसे कि श्रीगोस्वामीजी ने भी ब्याहादि में धनुष धारण नहीं कहा है।

Scanned by CamScanner

दोहा

यहाँ छत्र चँवरादि बहु, आरति वाद्य विधान।
परिकरमा जय विनय[1] करि, पगलागहीं अमान ॥१६॥
बहुरि समाज विराजि सब, मंजु मधुर छबि आनि।
मधुर वाद्य सँग नटहिं कोउ, मृदु रागिनी बखानि ॥१७॥

ध्वनि काफी आसावरी ताल धीमा

बसहु इन नैनन नवलकिशोर ॥ टेक ॥ दम्पति छबि माधुरी विलोकत, रतिपति लजत करोर ॥ सजि नव सप्त सिंगार नवीनो, चितवनि भौंह मरोर ॥ नील पीत पट ज्यों घन दामिनि, मंजुलता चित चोर ॥ १८ ॥

नैन पिय तोर अजब रसवार ॥ टेक—गरल सुधा मधु भरा मनोरम, स्याम सेत रतनार ॥ मरत जियत व्याकुल ह्वै डोलत, जेहि चितवत यक बार ॥ मंजुलता मनहर स्वाभाविक, क्यों कीन्हें कजरार ॥ १९ ॥

---

ढाल कर कड़ा कंकनहु, मुद्रिका सुकटिसूत्र किंकिनी लसै रसाल। पगकड़ा नूपुरादि भूषन कालानुसार, पुष्पमंजु धातु के सजावती रँगीली बाल ॥ २ ॥

१—गीतिछन्द—ललिलाल रूप विसाल कौ उर आनु आपु बिसारु रें। अँग-अंग की सुषमा लखे पर होत मोद अपारु रें। जेहि ताकते करुनाविलोचन तासु। होत उबारु रें। जन को सँभारत सर्वदा तेहि मंजु हीय सँभारु रें ॥ १ ॥ ( इसे ध्वनि अहलिया ताल त्योरा में गा भी सकते हैं। )

दोहा

सर्व तोष गृह को चले, चढ़ि गज रथ ललिलाल।
दक्खिन सिंहपौरि निकट, आये कुञ्ज विसाल ॥२०॥
कुंजेसा सादर मिली, सिंहासन पधराय।
दीन्हीं सबकी पत्रिका, यथा योग मिलवाय ॥२१॥
तहाँ देश के आय जन, अर्थचाह पुरवाय।
जाहिं सुछबि उर धारिके, परमारथहुँ अघाय ॥२२॥
कोइ कोइ कारज राउ सन, बूझि करहिं मिलि आत।
देखि देखि नृप भाग निज, फूले नाहिं समात ॥२३॥
यहि विधि सबहिन तोष करि, पितुदरसन हित जाहिं।
प्रिया सासु ढिग को चलीं, सहित सखिन रथ माहिं ॥२४॥
प्रथम कैकयी भवन में, बहुरि सुमित्रा गेह।
कौसिल्या गृह सात सत, वन्दति सहित सनेह ॥२५॥
कबहुँ विलम्ब भये मिलहिं, सब कौसिला निकेत।
तहँ छिन महँ वन्दित सबहिं, लहि असीस सुखदेत ॥२६॥
सासु उमँगि उर भाँति बहु, लाड़ करहिं अति हेत।
चारिहु भगिनिन विविध विधि, वसन आभरन देत ॥२७॥
पुनि पिय भाइन सखन सह, आइ जोहारहिं मात।
सहित वधूटिन्ह छबि लखहिं, ते लाड़हिं पुलकात ॥२८॥
समय कलेऊ की भई, सबहिं ले चलीं मात।
बैठारीं भीतर वधुन्ह, दुसरे दर सुत भ्रात ॥२९॥

Scanned by CamScanner

दधि चिउरा पकवान बहु, ते पत्राय अँचवाय।
इतर पान स्रग आदि दे, निरखहि मुद सरसाय ॥३०॥
पिय सखान अनुजन सहित, वन मृगया कहँ जाहिं।
सिय समाज सह सासु पग, सेवहिं भवनहिं माहिं ॥३१॥
आयसु लहि सखि सहित निज, आय कलेऊ भवन।
तहँ चौपड़ दालान में, करहि पियहि चिन्तवन। ३२॥
जब जब माता गेहते, शीघ्र फिरत सब कोय।
तब तब निज याही भवन, कलेऊ पंगति होय ॥३३॥
आवत पिय लखि सब उठीं, सियहि लाल उरलाय।
चौपड़ चौकी पर दोऊ, बैठे साज सजाय ॥३४॥
कछु सखि प्रीतम ओर की, कछु स्वामिनि दिसि आरि।
खेलि खेलाय विजय चहहिं, मंजु प्रिया की धारि ॥३५॥

इति श्री मञ्जुरसाष्टयामे दिवसादौ प्रथमप्रहरकेङ्कर्यवर्णने द्वितीयोयामः ॥ २ ॥

---

## ❋ अथ तृतीयोयामः

रागिनी आसावारी ताल धीमा

लखोरी चौपड़ के खेलवैया ॥ टेक ॥
बदन सदन उपमा को मानो, मुसकनि कोटि जोन्हैया ॥
पासे तकि तकि फेंकैं दोऊ, निज निज दाँव तकैया ॥

Scanned by CamScanner

पियदिसि चारुसिला सिय की दिसि, चन्द्रकला बतवैया ॥
दै दै सैन दोऊ बतलावैं, दम्पति अजब बुझैया ॥
पगे परस्पर छवि अवलोकत, पाँसे दाँव भुलैया ॥
मंजुलता दोऊ अरुझनि पर, छिन-छिन लेति बलैया ॥१॥

सलोनी चौपड़ पै बलिहारी । टेक। खेलि रहे दोउ बाजी लाये, कोउ न मानत हारी ॥ सिय सखि कहैं लाल अब सँभलो, यद्यपि विदित खेलारी ॥ छल बल करो सबै खेलन में, ऐसी बानि तुम्हारी ॥ सो करतूति इहाँ नहिं चलिहैं, होइहैं जीत हमारी ॥ तब लगि पासे परे प्रिया के, पिय नहि सके सम्हारी ॥ मंजुलता जय भइ स्वामिनि की, सखि विहँसी मुद भारी ॥ २ ॥

अनोखे चौपड़ के खेलवारी । टेक।
पहिले ही हम कहा सँभालो, सब कोउ देखनहारी ॥
तापर कहो कहाँ हम हारे, वातन चित्त रहारी ॥
भइ सो भई अबऽब से खेलो, देखोंगी मनुसारी ॥
अबकी बाजी धरके खेलो, ऐसी सर्त करारी ॥
हारे मंजु स्वामिनी चेरो, जीते वेई तुम्हारी ॥ ३ ॥

लागि फिरि चौपड़ होन सलोनी । टेक।

Scanned by CamScanner

चहुँदिसि ते अलि साज बजावें, खेल उमंग सरसौनी ॥
अपर सरस रागिनी अलापैं, आसावरि यह जौनी ॥
अद्भुत् खेल होत तन मन दै, दोउ दिसि हृदय जितौनी ॥
दोउ छबि देखि परस्पर मोहैं, सखियाँ देत चेतौनी ॥
मंजुलता सिय कृपा विलोकी, प्रीतम हार सुहौनी ॥४॥

दोहा

आई भोजन कुञ्ज की, अलि भलि समय विचारि।
विजौ हेतु विनती करी, चले सुखेल निवारि॥ ५ ॥
कुंजेमा सादर लई, तहँ सिंगार उतारि।
पुनि सूक्ष्म धारण कियो, आलिन समय विचारि॥ ६ ॥
भवन मध्य विस्तार का, गच्चो सुभग सुढारि।
कंचन चौकी पर जहाँ, सजे सौंज वरदार॥ ७ ॥
दम्पति तहँ बैठे लसैं, सन्मुख आलिन कतार।
थार युगल सजि बैठकिन, आगे मंजु सुधार ॥ ८ ॥
कछुक अली सब साज ले, चौकी के यक धारि।
भोजन छबि अवलोकि मृदु, गावहिं मंगल गारि ॥ ९ ॥

मंगल गारि पद

आजु लखो सखि पाकसाल छबि, जेंवत सिय रघुराई जी ॥

चार भाँति षट् रस बहु व्यंजन, तिनमें भेद अथाईजी।
भात भाँति बहु झीन सुगन्धित, रोटी घिउ चुपराईजी ॥
अरहरि चना सु मूंग उड़द की, दालि सरस कुलथाईजी।
खस्ता पूड़ी लूची कचौड़ी, परुँठा दालि पुराईजी ॥
मालपुवा मीठा अरु सीठा, मोहन भोग हलुआईजी।
बेसन बुंदिया बहु विधि मोदक, फन्द सन्देस पेड़ाईजी ॥
जंबु पंतुवा सकरपाल अरु, रस पुंगल गोंठवाईजी।
रसगुल्ला आमृती जिलेबी, मिठी पकौड़ी बुँदाईजी ॥
निमकी खुरमा खाभा खोवा, दूध खीर तसमाईजी।
दही मही रायता अनेकन, मीठ सीठ महिराईजी ॥
फरा वरा बुंदियादिक कोर वर, अरुदधि पना भिजाईजी।
मूँगौरी मेथौरी पकौड़ी, बड़ि कोहड़ौरी सुहाईजी ॥
सुरनौरी तिलौरी दनौरी, विविध भाँति चरफाईजी।
परवर आलू केला करैला, मीठकदू अरुआईजी ॥
खीरा ककड़ी कुम्हड़ा भिन्डी, टिंडि ओल घिवराईजी।
खेकसा तारई कटहर बोड़ा, सेम दोऊ उड़दाईजी ॥
छोटी करैली मीठा सहिजन, पपिता मटर फलाईजी।
मूली ललित सुबथुवा सूजी, पटुवा अरु चौराईजी ॥
पोई सोवा मेथी धनियाँ, मरसा पलकीराईजी।
इन सबके बहुभाँतिन सालन, साग विविध भजवाईजी ॥
किसमिस दाख बदाम छोहरा, गिरी चिरौंजी भजाईजी।

Scanned by CamScanner

पेस्तालाची मूँगफलीहू, भाजि विविध धरवाईजी ॥
अँवलाआम करौंदा अमरख, किसमिस आदि मिलाईजी ।
चटनी बिबिध पुदीना सोवा, धनियादिहु मिलवाईजी ॥
खट्टे मीठे बिबिध साग के, केतिक अँचार गिनाईजी ।
अमरा आम सुजामुनि सिरका, किमिवरनौ तलखाईजी ॥
अँवला बेल मुरब्बा रसमय, पाग बिबिध रसदाईजी ।
बिबिध आम अंगूर नरंगी, लीचू फल सरदाईजी ॥
सेव अनार आमरुद केला, बड़हर पनस कोवाईजी ।
खीरा खरभूजा, तरभूजा, फल पुनि ऊख गेंड़ाईजी ॥
बिबिध रंग मनिमय गिलास में, सरयूजल छविछाईजी ।
छप्पन भोग छतीसौ व्यंजन, यक-यक वरनि न जाईजी ॥
निगमहुँ अगम भोग पिय पीको, मंजुलता किमिगाईजी ॥ १०

तथा ( दूसरी प्रकार )

सिय पिय परवारी, सिय पिय परवारी जेंवत दोउ अनुराग भरे ॥ सिय० ॥ दुइ कञ्चन थारी, दुइ० खोरवन ब्यंजन साजि धरे ॥ सिय० ॥ सखि पीढ़न बैठीं, सखि० सजि सजि थार सुपाँति करे ॥ सिय० ॥ झुकि झुकि अलि फेरैं, झुकि० नुपुरन की झनकार हरे ॥ सिय० ॥ दोउ हरे—हरे पावें, दोउ० लखत परस्पर रूप अरे ॥ सिय० ॥ सखी गारी गावैं, सखी० सुनि-सुनि विहँसि

उछाह ढरे ॥ सिय० ॥ रसकारी विनोदैं, रस० पावत करहिं अनेक तरे ॥ सिय० ॥ जलपान करावें, जलपान० मंजुअली लिहें सौज खरे ॥ सिय० ॥ ११ ॥

दोहा

निकटहि चौकी पर अलिन, अचवन सविधि कराय।
चलि लिवाय दालान में, सिंहासन पधराय ॥१२॥
अतर पान स्त्रग आदि दे, दीर्घादर्स दिखाय।
आरति करि सिरनाय अलि, सेवहिं प्रसादीजाय ॥१३॥
पाय धोवाय सुचौक पुनि, मंजु आय समुदाय।
मधुरवाद्य अरुगान जहँ, नृत्यभाव सरसाय ॥१४॥

ध्वनि खम्माच ताल धीमा

सखी रीं लखु सैन करन की बात ॥ टेक ॥
दोउन नैन मैन कोननि में, मादकता सरसात ॥
सुषमा पुञ्ज साँवरे गोरे, मृदुल मनोहर गात ॥
वदन इन्दु सर सोरुह लोचन, मन्द-मन्द मुसुकात ॥
लखत अनूप रूप की शोभा, रतिपति कोटि लजात ॥
मंजुप्रान प्रानिनी दृगन में, कछु आलस दरसात ॥१५॥

दोहा

अलियक सयन निकुञ्ज को, विनय सुनाई आय।
चले बिसद सुखपाल चढ़ि, तहँ सुपलँग पधराय ॥१६॥

Scanned by CamScanner

बीना मधुर बजावहीं, अलि सिंदूरा गाय।
मंजु सविधि पौढ़ाय दोउ, पद पलोट सकुपाय ॥१७॥

ध्वनि सिन्दूरा ताल धमार

सोये री लखु कैसे सेज सामान,
सकल मनु आयो मदन अमान ॥
मनिमय सुठि पर्यङ्क मनोहर, दोउ दिसि वस्तु विधान ॥
फर्स विचित्र चाँदनी तानी, जेहि मुक्तन दामान ॥
चहुँदिसि सुछबि मनोहर सीसन, विविध सरस चित्रान ॥
दम्पति रुख आलस महँ देखत, अलिगन परम सुजानि ॥
मंजुलता निजपौढ़ि आसननि, रमहि सुछबि दृगआनि॥१८

इति श्रीमंजुरसाष्टयामे दिवसादौ द्वितीयप्रहरकैंङ्कर्य वर्णने तृतीयोयामः ॥ ३ ॥

## ※ अथ चतुर्थोयामः ※

दोहा

आसन आसन पर सखी, युगल सुछबि अनुहारि।
दृगन लाहु सुख अनुभवहिं, मंजु विचारि-विचारि॥ १ ॥

ध्वनि भीमपलासी ताल धीमा

सिया प्रीतम सुछबि रसवारी है ॥ मनहुँ

Scanned by CamScanner

तमाल संग सुठि राजत, कनक लता सुकुमारी है ॥ मुख कर उर कटि जानु मनोहर, अजब लुनाई धारी है ॥ पलँग उपर दुति स्याम गौर सँग, हरित प्रभा विस्तारी है ॥ मंजु माधुरी बनै न बरनत, हिये लिये सुखकारी है ॥ २ ॥

दोहा

जागन समय विचारि अलि, जुरीं अजिर मधि आनि ।
मधुरे सुरन जगावहीं, पीलू राग बखानि ॥ ३ ॥

राग पीलू

प्रीतम जागन वेर भई ॥
वीना नूपुर धुनि अलि गावत, गर्गे सुरस मई ।
तब मुसुकान माधुरी पर तिन, सर्वस वारि दई ॥
उठो वदन दृग कमल विकासो, अलिन अधार वई ।
मंजुलता तिरछी चितवनि की, चाहसु नित्य नई ॥ ४ ॥

खिमटा पीलू दोहावली

तेरी मधुर मुसुकान रसिक वर ।
जियरा से नाहीं भुलाय रे ॥

दोहा

हँसी रावरी उर वसी, वसी करन सी आय ।
कसक करेजे में करै, धीरज धरो न जाय ॥ १ ॥ जिय० ॥
चातक चाहत चाह सों, ज्यों स्वाती को नीर ।
त्यों मनमोहन दर्स हित, चाह किये सब वीर ॥ २ ॥ जि० ॥

Scanned by CamScanner

जनि तरसाओ अब पिया, विगसाओ मुखकंज ।
नयन खंजु मृदु मंजु के,रसवस गुनि अलिपुञ्ज ॥३॥जि०५

दोहा

जगे जानि प्रीतम प्रिया, परदा झीन उघार ।
मुख धोवाय पट पोंछि वपु, करहिं अलीं सिंगार ॥ ६ ॥
पुष्प धातु के आभरन, रितुरुख सूक्षम धार ।
अपर मनोहर छवि निरखि, मृदु रागनी उचार ॥ ७ ॥

ध्वनि भीम पलासी ताल धीमा

पिय तोरे नयन जुलमों से भरे ॥
जेहि चितवत तिरछे तकिमारत,भौं कमान पुतली ज्यों सरे ।
निसिदिन पीर पिराति लगहिंजब,नोकदार अनियारे खरे॥
परत तुरत घायल करि डारत, मानो सिरोही में बाढ़ धरे ।
मंजुलता अनुपम तींछन ये,कितनों के दिल कतल करे॥८॥

दोहा

फल बहु भाँतिन भोग धरि, आरति कीन्हीं बाल ।
चले सकल सह यान चढ़ि, केलि कुञ्ज ललिलाल ॥ ९ ॥
कुंजेसा सादर मिली, रुचिर पीठ पधराय ।
मनिमय सीसा भवन को, रचना कही न जाय ॥१०॥

Scanned by CamScanner

ध्वनि पीलू ताल दादरा

लुकि रहो ग्वैयाँ मूँदि पिय अँखियाँ ॥
चुपके छिपो कुञ्ज कोननि में, मिय स्वामिनी यतन सों रखियाँ। मंजु स्वामि खोजन चतुराई, लखौं आजु कहैं रस वस सखियाँ ॥ ११ ॥

दोहा

लुकीं जानि बहु रूप करि, पिय खोजहिं तत्काल।
पकड़त कुञ्जन मध्यहिं हँसि, प्रगटहिं रहस रसाल ॥१२॥
पुनि पूरबवत् आय सब, राजे तब तत्काल।
अचरज के कौतुक अलिन, दिखरावहिं ललि लाल ॥१३॥
सीसन से दर्सत तहाँ, अति लघु चित्र विसाल।
विविध रंग रितु साज सब, चरित विराट रसाल ॥१४॥
सकल धाम अवतार सब, लीला सहित बिसाल।
उत्पति पालन प्रलय अस, होत मनहुँ तेहिकाल ॥१५॥
विविध मृगन कुस्ती कहूँ, कृत्रिम सेन लराय।
दारु पूतरिन में कतहुँ, रसमय वाद सुनाय ॥१६॥
तब लगि दोल निकुञ्ज की, आली समय विचारि।
चलन हेतु बिनती करी, अलि आरती उतारि ॥१७॥

भुजंगप्रयात छन्द

लली लाल हिंडोल भौने सुगौने।
चहूँ द्वार के मध्य ताड़ाग जौने ॥

तहाँ मज्जि ज्यों भोर स्नान वर्ने।
मज्यो साज ज्यों पूर्व सिंगार भोने ॥१८॥

दोहा

कबहुँ परस्पर करत दोउ, विविध भाँति सिंगार।
अरहिं परस्पर रूप पर, अली निरखि बलिहार ॥१९॥
आय विराजे दोल में, तहँ की साज सिंगार।
भोग आरती होत जिमि, कुञ्ज सिंगार उचार ॥२०॥
दोऊ झूलत दोल में, समुहें अलिन समाज।
निरखि निरखि छवि गावहीं, विविध बाजने बाज ॥२१॥

रागसूहो छन्दावली

कनक भवन झूलन गृह, झूलत सिय रघुबीर।
रिमि झिमि बूँदन बरसत, बहत सुत्रिविध समीर॥
दोल कुञ्ज सब मनिमय, महि गच काँच सुढार।
खम्भदार बहुद्वारन, झूलन चित्र अपार॥

हरिगीति छन्द

झूलन सुचित्र अपार बहु, रँग मनिन पचि खम्भन रचे।
परदा टँगे प्रतिद्वार तिन, दामन सुमुक्ता मनि खचे॥
बहु हरित मनिमय बेलि, खम्भन झाड़ बहु छबि छावहीं।
चित्राम की पंछी पवन लगि, बोलि मनहुँ बुलावहीं ॥१॥
चहुँदिसि सुभग सरोवर, कमल बिपुल रँग मोह।
मधुप निकर मृदु गुञ्जत, लखि सुनि मुनिमन मोह॥

Scanned by CamScanner

सरतट हरित लतावलि, सोहति मनहुँ वितान।
मधुर मधुर घन गरजत, चमकत बिदुत छटान ।।

हरिगीति छंद

चमकत सुविदुत छटान, देखि घटान रस उमँगत हियो।
बोलहिं सुचातक मोर कोकिल दम्पती रुचि सरसियो ॥
सिर युगल छत्र सुव्यजन युग युग चँवर दोउ दिसि राजहीं।
अरु अपर सौंजन सहित अलिगन आसपास विराजहीं ॥२॥

दोहा-

युगल युगल सखि दुहुँ दिसि, भूषन वसन सँवारि।
झमकि झमकि झुकि झोंकत, सियपिय रुचि अनु-सारि ॥
सहमि सहमि सिय डरपति, गहति सुपिय पट छोरि।
चन्द्रकला सखि वरजति, पिय सन कहति निहोरि ॥

हरिगीति छंद

पिय सन सुकहति निहोरि दम्पति डोरि कर कमल-निगहे। झुकि मुखनि रुखकर करनि गहि छवि निरखि दोउयक टक रहे ॥ उर यकक फूलन माल डोलत मिलत अनुपम छाजहीं। सिय लटनि पिय कुण्डल उरझि पिय माल सियकर भ्राजहीं ।।३।।

दोहा-

उमंगि उमंगि दोउ झूलत, मधुर मधुर मुसकात।
लगि लगि कान परस्पर, बोलत रस की बात ॥

Scanned by CamScanner

सिय उर भूषन डोलत, उड़त सुपट फहरात।
पिय मृदु विहँसि सुधारत, परसत अतिहिं सुहात ॥

हरिगीति छंद

परसत सु अतिहि सुहात बाहु मृनाल कर अरुनारहीं। लखि लखि सुतन मन वारि चहुँ दिसि सखि समाज निहारहीं ॥ बहुतक अनेकन बाजने सु बजाय राग उचारहीं। उर उमँगि निरतति मंजुलता अपान सुरति विसारहीं ॥ ४ ॥ २२ ॥

राग नट

झूलत रसिक पिय सिय संग। कनक मनिमय दोल मधि लखि, लजत रती अनंग ॥ सामने अलि गन विराजति, बजत ताल मृदंग। विविध कजली सुहो गावति, नृतति घुरि मुरि अंग ॥ ताल सुनि उर उमँगि दम्पति, भरत स्वर यक संग। वदत राग मलार सो सुनि, हहा हूहू दंग ॥ परस्पर कल विविध कौतुक, करत सुचि रस रंग। आलि लखि लखि सुमन बर्सति, मंजु सहित उमंग ॥ २३ ॥

शुद्ध मलार ताल धीमा

उमड़ि घुमड़ि बादरवा छाये। तड़िता तड़क कड़क घन गरजत, चातक मोरन सोर मचाये ॥ झींगुर झनक सु दादुर बोलत, कोकिल कूक सुनात सुहाये ॥ नभ बक पाँति उड़ात चहूँ दिसि, सीतल

Scanned by CamScanner

मन्द सुपवन बहाये ।। मंजु मही हरियाली छाई, पावस
की छबि को कवि गाये ।। २४ ।।

पूर्बी (मलार)

हरित निकुञ्ज आज दोउ झूलत, झूलनसाजसजाय। टेक।।
उमड़ि घुमड़ि बादरवा छाये, गरजत अधिक सुहाय।
निसि अँधियारि बिजुलिया चमकै, हरितलता लहराय।।
उड़त बलाक पाँति बहु चहुँदिसि, कोकिल कूक सुभाय।
चातक मोर चकोर बृन्द बहु, बोलत मोद बढ़ाय।।
रिमि झिमि बूँदन बरसन लागे झिल्लिन झनक सुनाय।
सरन चहूँ दिसि दादुर बोलत, आनन्द उर न समाय।।
सीतल मन्द सुगन्धित मारुत, चलत सुपट फहराय।
मंजुलता सिय पियहिं विलोकति,सहितसखिन समुदाय।।२५

कजली

आली झूलैं री सिया पिय कैसी झूलन की बहार।।
पटुली बेलन डाँड़ी मनिमय, युग–युग खम्भ मँझार।
छूटत दुहूँ ओर बहु धारन, अतर गुलाब फुहार।।
विविध साज मिलि-मिलि पिक बैनिन,गावति सुहो मलार।
युगल २ सखि दोउ दिसि हूलैं,मंजु निरखि बलिहार।।२६

तथा (दूसरी प्रकार)

हरि हरि कौशल राजदुलारे, सियहिं झुलावैं रे हरी ।।टेक।।

जम्बूनद के खम्भा, बेलन डाँड़ी सँवारी रामा।
हरि हरि मनिमय हरित पटुलिया, आवे जावे रे हरी ॥
हाथे रेसम डोरी पकड़े, झोकैं बढ़ावैं रामा।
हरि–हरि जनक लली सुकुमारी, डरि डरि जावें रे हरी ॥
प्यारी सोभा देखैं लेखैं, भागैं अतूलैं रामा।
हरि-हरि मंजुलता लखि २ अलि,बलि २ जावें रे हरी।२७

इति श्री मञ्जुरसाष्टयामे दिवसान्ते प्रथमप्रहरकैङ्कर्यवर्णने चतुर्थोयामः ॥ ४ ॥

## ❋ अथ पंचमोयामः

दोहा

झूलि उतरि सिय भेंटिपिय, पितु समाज कहँ जाहिं।
तहँ प्रिय अनुज सखान संग, गुरु परिजनन मिलाहिं ॥१॥
कुञ्जहिं दो खण्डे विसद, बैठक भवन सजाव।
चढ़ि सुयन्त्र सिय सखिन सह, बैटहिं सहित बनाव ॥ २ ॥
गुरुतिय कुल वृद्धा भगिनि, परिजन बड़ि लघु नारि।
आवत मिलहिं सबहिं सिया, यथा योग सत्कारि ॥ ३ ॥

Scanned by CamScanner

ते बरनहिं पिय प्रीति अरु, प्रिय गुन सील सुभाय।
देखिय नेह प्रकास में, बाल अली सुचि बाग ॥ ४ ॥
हास विलासहु विविध विधि, करि गवनहिं पुरबाल।
आवत पिय लखि उठि प्रिया, मिलहिं अंक भरि लाल॥५॥
कछु बिलम्बि तहँ पीठ पर, करि कछु राग विलास।
चलहिं यान चढ़ि वाटिका, रंगमहल चहुँ पास ॥ ६ ॥
अद्‌भुत अचरज चित्र अरु, नाम विचित्र सुचारि।
सरवर युगल प्रत्येक जिन्ह, घाट बने चहुँ धारि ॥ ७ ॥
तहाँ कंज अलि गुञ्जहीं, त्रिविध मन्द वह बात।
लता पुष्प के विविध रङ्ग, कुञ्जन मन ललचात ॥ ८ ॥
भाँति अनेकन घास तिन, क्यारी विविध प्रकार।
पुष्प करोरनि भाँति के, सदा वसन्त बहार ॥ ९ ॥
विविध रङ्ग के केलि मृग, पंछी भाँति अपार।
छवि दिखलाय सुबोलि चित, कर्षहिं बारहिं बार ॥१०॥
सलिल यन्त्र फूही झरैं, कतहुँ कतार कतार।
कोइ इक सत दुइ सत कोई, धार हजार हजार ॥११॥
घाटन प्रति मधि वाटिका, फुल बँगला रँगदार।
नवल रङ्ग नित केर नित, नूतन साज विचार ॥१२॥
यक बँगले महँ होय जो, कौतुक सीसन द्वार।
सन्मुख दुसरे महँ लखहिं, सब सोई वहि पार ॥१३॥



Scanned by CamScanner

ताते बाग फिरैं चहूँ, दोउ मर बँगलन अद्धं।
रीझे मृगन चुगाय छवि, उषमहिं लखि सुखवद्धं ॥१४॥
क्रम मह दिन प्रति बाटिकन, विचरत बँगलन आय।
करहिं सरस क्रीड़ा ललित, निरखहिं अलि हरषाय ॥१५॥

द्रुतविलम्बित छन्द

सह सखी सिय राम सु वाटिका।
उतरि देखत फूलन धारिका ॥
पहुँचि के बँगले महँ बैठियाँ।
बृहद साज उतारहिं आलियाँ ॥ १६ ॥

ध्वनि जंगला ताल दादरा

पिय प्यारी सुमन सिंगार करैं ॥ टेक ॥
विविध रंग फूलन पट भूषन, वपुष रंग अनुहार ढरैं।
डलियाँ सजे विविध रङ्ग कलियाँ,अलियाँ देति बनाय लरैं॥
नख सिख सजि रचैं हार सुमाला,चित्रित साजैं युगल गरैं।
तैमहिं साजि अली जुरि गावैं,मंजु मनोरथ बेलि फरैं ॥१७

द्रुतविलम्वित छन्द

उठि चले मग देखत मी पिया।
पग मंजीर धुनी मृग रीझिया ॥
निकट आवत प्रीतम देखहीं।
दृगन कौर प्रिया सम लेखहीं ॥१८॥

द्रुतविलम्वित छन्द

जलज पादहिं सूँघहिं पानिहीं।

Scanned by CamScanner

छुवत कूदि दिखावहिं वानिहीं ॥
सुख बढ़ावत फेरत हाथ हैं ।
गहि चुगावत डोलत साथ हैं ॥१९॥

दोहा

पहुँचि सुबँगले दूसरे, राजे दोउ हरषाय ।
मारो सुवा पढ़ावहीं, गावहिं अलि भरिचाय । २०॥

ध्वनि जँगला ( ताल दादरा )

युगल रसिया सुकसारी पढ़ावैं ॥ टेक ॥
कर कमलन गहि कनक पींजरन, दै-दै चारा परचावैं ।
जनकलली कह अवध छैल तव, सोने सों चोंच मिढ़ावैं ॥
सुक प्यारी गुन सारी पिय गुन, भाषैं मधुर भरे भावैं ।
मंजुलता सुनि छबिलखि अलियाँ,हीये न फूलीसमावैं॥२१

दोहा

पुनि गवने देखत ललित, कुञ्ज लता पुहुपान ।
त्रय सम्पत्ति सहित लतन, रीझहिं करहिं बखान ॥२२॥

कुण्डलियाँ

आये देखि मोरगन, घन इव स्यामा स्याम ।
सीय लखहि तिनकण्ठहिं, पिय वपु सम अभिराम ॥
पिय वपु सम अभिराम पूँछ, तिन रघुपति निरखहिं ।
प्यारी के कच पास पाटिया, सम गुनि हरषहिं ॥
परसत नृत्यहि पंख खोलि, पिय नाज चुनाये ।
सुख पावहिं कर मंजु सँवारत सब लखि आये ॥२३॥

Scanned by CamScanner

दोहा

पहुँचि सुबँगले तीसरे, लखि परहेलि जमाव।
दम्पति बूझहि परस्पर, सखि समाज छबि गाव ॥२४॥

ध्वनि जँगला ( ताल दादरा )

रसिक दोऊ परहेली बुझावैं ॥ टेक ॥
भूषन नगन विलोकि परस्पर, गूढ़ैं सु बूझैं बतावैं।
युग सरोज यक चन्द्र कहो प्रिय, भानू के बीच लखावैं ॥
स्याम सेत तन वसन तिया पिय, डोलें इन्दु भरे भावैं।
एक पुरुष के अङ्क कहो प्रिय, मोला सुनागी सुहावैं ॥
कहो लाल श्रुतिचन्द कञ्ज अहि, एकै ठौरै दरसावैं।
चहुँ दिसि ते सजि साजसु अलियाँ, ताकैं दृगों भरे चावैं ॥
पिय प्यारी मृदु वैन विलोकनि, हीय में मंजु बसावैं ॥२५॥

हंसगति छन्द

बूझि बुझाय सुचले हंस बहु आयउ।
लाल चोंच पद स्वेत बरन मन भायउ ॥
प्रीतम रीझि प्रिया गति मिलवत भावन।
नवनि रीझि प्रिय स्वेत हार दिय चावन ॥ २६ ॥

दोहा

बहुरि चौथ बँगले पहुँचि, लखि होली को साज।
अलि गावहिं बढ़ि क उमँग, खेलहिं युगल समाज ॥२७॥

Scanned by CamScanner

ध्वनि जंगला ताल दादरा

होरी खेलैं रँगीले सिया सों पिया। टेक०।
निजनिज टोल समेत रसिकदोउ, फूलनझोंक झकोर किया।।
पुनि भरि अबिर गुलाननझोरिन, झोंकि कपोलन पै मलिया
खेलिखेलाय सहाय सियहिंपिय, आलिन तीय सिंगार किया
हारि भषाय ताल दें आलिगन,प्रीतम मंजु लजैं सु हिया।२८

दोहा।–

चहुँ बँगलन रमि सर तटहिं, अलिसह मीन चुगाय।
विविध जाति बहु रंग की, निरखहिं छबि उतराय ॥२६॥
चंग समय लखि आलि यक, विनयी सहित हुलास।
सखिन सहित आये अँटा, चढ़ि वर यान बतास ३०॥
तहाँ चंग को साज लखि, गहि सुडोर ललिलाल।
हरषि पतंग उड़ावहीं, छबि लखि गावहिं बाल ॥३१॥

ध्वनि काफी ताल धीमा

खेलत चंग सिया रघुराई।
विविध रंग चंगन पर सोहैं, खगन चित्र विरचे सुघराई ॥
कोउन किंकिनि आदि मधुरसुर, बहु रँगमनि जनु ग्रहनलराई
कटि कटि गुड़ी गिरैं भूतल में, नगर चहूं दिसि होत धराई॥
यहि विधि खेलिरहे बहुदाँवन,मजु सियापिय चङ्गगिराई।३२

Scanned by CamScanner

### ठुमरी

देखो आली सिया पिया पतँग उड़ावें रे ।।टेक०।।

डोरियाँ स्याम पीत कर लसियाँ,
कमल करन गहे खींचें औ बढ़ावें रे ।।
हार–जीत की करि करि बाजी,
अलिगन दोउ दिसि उमँग बढ़ावें रे ।।
मंजुलता भइ जीत प्रिया की,
बिहँसि सु अलि कर ताल बजावें रे ।।३३।।

### सोरठा

यहि विधि गुड़ी उड़ाय, चले सकल सोइ यान चढ़ि ।
सरयू तट चलि आय, पावनि सरि सोभा लखहिं ।।३४।।

### भुजंगप्रयात छंद

तहाँ घाट सोपान हैं विद्रुमों के । सुचित्राम तापै बने मोतियों के । लसै घाट की फर्स गच्ची सुढारी । पड़ीं स्वर्न की चौकियाँ साँज धारी ।।३५ सुवारी तरंगें खिले कंज सोहैं । लहैं गंध आली करैं गुंज मोहैं ।। अनेकों खगों की छटा कूज न्यारी । फिरैं भाँति भाँती सुनावें सँवारीं ।।३६।।

Scanned by CamScanner

बरवा छन्द

घाट निकट यक बँगले महँ पधराय ।
पिय प्यारी तन उबटन अलिन कराय ॥ ३७ ॥
पैठे वारि अलिन मृदु मलि नहवाय।
क्रीड़हिं मनहुँ कोलाहल सिन्धु मथाय ॥ ३८ ॥
जल बाहर दोउ आय सविधि पट धार।
निकट कुञ्ज अलि करहिं सुरास सिंगार ॥ ३९ ॥

इति श्री मञ्जुरसाष्टयामे दिवसान्ते द्वितीयप्रहरकैङ्कर्यवर्णने पञ्चमोयामः ॥ ५ ॥

## * अथ षष्ठोयामः *

दोहा

जुरीं पूर्ण सिङ्गार सह, नटन वेष अलि धारि।
चढ़ि विशाल रथ दोउ चले, सहित सकल सुकुमारि ॥ १ ॥
विविध भाँति कौतुक करत, मग लोगन सुख देत।
पहुँचे कुंजेसा मिली, प्रविसे रास निकेत ॥ २ ॥
सुभग पीठ राजे दोऊ, युगल छत्र सिर भ्राज ।
युग-युग चँवर सुढारहीं, आगे अलिन समाज ॥ ३ ॥

वसु–वसु श्री यूथेश्वरी, वाद्य सहित दुहुँ धार।
अपर नव वरन नृत्य हित, लसहिं मण्डलाकार ॥ ४ ॥
अगर दीप नैवेद्य करि, आरति पूर्ण विधान।
चरन लागि राजत भई मंजु नटति करि गान ॥ ५ ॥
कमलछन्द—क्रमन । उठहिं । नटन । सबहि ॥ ६ ॥

ध्वनि ईमन ( ताल धीमा )

भजु मन श्रीसीता रघुलाल ॥ टेक ॥
गोल कपोल अधर बिम्बाफल, लोचन ललित बिसाल।
सुक नासा भौं मदन रूप धनु, अति सुन्दर हैं भाल ॥
सीस चन्द्रिका क्रीट लसत हैं, वेनी कच घुघरात।
श्रवन सुभग ताटंक सु कुण्डल, गल मोतियन की माल।
कर कंकन कटि किंकिनि राजति, नूपुर मृदु वाचाल।
गौर स्याम तन वसन अनुहरत, पंकज कर पग लाल ॥
मंजुपीठ राजत लखि याचहिं, उघटन रास रसाल ॥भ०७॥

ध्वनि ईमन की झाँझ ( ताल दादरा )

लगि रहे पिय प्यारे से नैना । टेक ।
तरसत रहत छिनहिंछिन देखत, यों चहत कहूँ पलक परैना ॥
चितवनिसरस बनक अलबेली, मद हँसनि बोलनि सुखदैना।
मंजुलता रसिया मधुराई, मन भावै मुख कहत बनैना ॥८॥

Scanned by CamScanner

ध्वनि ईमन की मांझ ( ताल दादरा )

जिया असैगी प्रिया की लुनाई ॥
नखसिख छबि अवलोकत निसदिन, नैनन पलक परत दुखदाई। बदन कमल मकरन्द पान सम, तुलत न अखिल लोक ठकुराई ॥ प्रान प्रान को जीवन बूटी, बड़े भाग ऐसो धन पाई। मंजु मनोहर मूरति बरनत, प्रीतम देह दसा बिसराई ॥ ९ ॥

युगल सोभा रँगे मोरे नैना ॥
स्याम गौर मिलि अनुपम झाँकी, मनो मेघ संग तड़ित दुरैना। अरस परस गलबाहीं दीन्हें, लसति मनोहर मृदु मुसकैना ॥ क्रीट चन्द्रिका नासामनि नथ डोलत कुंडल करन फुलैना। मंजुलता नख सिख सुघराई, देखत मात्र बखान बनैना ॥ १० ॥

राजैं दोऊ सुरास भवन में ॥
रघुनन्दन मिथिलेस नन्दिनी, चित्त दिये अलिगन रिझवन में। स्याम गौर छबि अतुल परस्पर, मृदु हँसि कहर करैं चितवन में ॥ मंजुलता युग विमल चन्द्रमा, विलसत जनु नछत्र अलियन में ॥ ११ ॥

देखैं रास रहस पिय प्यारी ॥
गान तान बहु भाँति रसीली, नृत उघटैं सखियाँ रसवारी।

Scanned by CamScanner

हाव भाव बहु सुगनि ढुगनि करि, अननुकला पूरन सब बारी ॥ मंजु प्रान-प्रानिनी रिझावति, प्रमुदित लखि सब तन मन वारी ॥ १२ ॥

ठुमरी

पिया प्यारी छबि आली हिया में बसाओ रे ॥टेक॥ पीताम्बर नीलाम्बर धारे, क्रीट मुकुट चन्द्रिका पै बलि जाओ रे ॥ मन्द हँसनि तिरछी चितवनियाँ, भृकुटि मटक लखि चटक बिकाओ रे । रास विलास अनूप मनोरम, मंजुलता सुखसिन्धु में समाओ रे ॥ १३ ॥

ध्वनि लावनी रंगत बशीकरण ( ताल कव्वाली )

आली कैसी छबि आज कुञ्ज में छाई ।
सिय राम सखिन युत रास रमत सुखदाई ॥
मनिमय सिंहासन राजत हैं पिय प्यारी ।
तेहि दलन छत्र चँवरादि सजे सुकुमारी ॥
कोउ ताल मृदंग सितार बीन यक तारी ।
इस राज साँझ मंजीर सजे बहु वारी ॥
धुनि रही मनोहर छाय उमँग सरसाई ॥ सियराम० ॥
ललना अनेक सुर उघटहिं ताल सँभारी ।
ताथेइ ताथेइ थेइ नटति विविध गति न्यारी ॥
कोइ पारावत गति कोउ मोर गति धारी ।
कोउ अरस परस गहि नटत सुरस मतवारी ॥

Scanned by CamScanner

कोउ थिरकैं फिरकैं झुकैं मुकटि चमकाई ।। सियराम० ।।
निज टोल-टोल मिलि आव भाव दरसाई ।
कोउ विविध कला सह पानि पतंग फिराई ।।
कोउ ग्रीवा कटि चमकाय सुमुख मटकाई ।
छुमछुम छुमात पग अवनि नटत जब धाई ।।
दम्पति निरखत अति हेतु मन्द मुसुकाई ।। सियराम० ।।
सखि भईं मण्डलाकार कतार बनाई ।।
तिनमध्य प्रिया सह नागर श्रीरघुराई ।।
सब नटत परस्पर कर में करन मिलाई ।
नूपुर धुनि छननन छुमुक छुमुक छुमुकाई ।।
लखि मंजु अलिन प्रति पिया हिया सरसाई ।।सिय०१४।।

दोहा

यहि विधि रास विलास करि, सकल पूर्ववत राजि ।
दंपति साज सवाँरि अलि, मंजु आरती साजि ।।१५।।

इति श्री मञ्जुरसाष्टयामे निशाऽदौ प्रथमप्रहरकैङ्कर्यधर्णने षष्ठोयामः ।। ६ ।।

## ❋ अथ सप्तमोयामः ❋

दोहा

आली ब्यारू कुञ्ज की, समय प्रार्थना कीन्ह ।
चले यान चढ़ि सखिन सह, रंग भवन चित दीन्ह ।। १ ।।

Scanned by CamScanner

( अरिल्ल छन्द )

अलिन तहाँ पधराय सिंगार उतारेऊ।
नवल साजि मुख हाथ सुचरन पखारेऊ ॥
ब्यारु कुञ्ज लिवाय चली कुंजेश्वरी।
चौकी पर पधराय थार युग अलि धरी ॥ २ ॥

मंगलगारि पद

करत वियारू जानकि वल्लभ, विंजन विविध सँवारीजी। खस्ता पूड़ी लूची कचौड़ी, पुआ आदि रस कारी जी ॥ सकर पाल मोदक रस पुङ्गल कन्द सँदेस ग्वारी जी। रसगुल्ला आमृती जलेबी, पेड़ा आदि सुधारी जी ॥ परवल आलू और करैला, केलादिक तरकारी जी। त्रिविध भाँति मेवा अँचार बहु, चटनी भाँति हजारी जी ॥ दही रायता दूध तसमई, बहु सिरखा तलखारी जी। आम अनार सेव नसपाती, अंगूरादि सु वारी जी ॥ यहि विधि अमित भाँति दोउ पावहिं, आलिन सहित सुखारी जी। सरस रहस्य निरखि पावनि में, आलिन मोद अपारी जी ॥ जल पवाय आचमन करायो, सरयू जल लै भारी जी। सिंहासन पधराय पान दे, लहि प्रसाद रुचिकारी जी ॥ ३ ॥

दोहा

अलिगन साज बजावहीं, मंजु समय अनुहार।
छाया राग सुकान्हरा, रागिनि मधुर उचार ॥ ४ ॥

ध्वनि छाया ( ताल धीमा )

देखो देखो री सहेली पिय प्यारी मधुराई ॥टेक॥
मधुर सिंगार सौंज सब धारी, मधुर हँसनि बोलनि सुख-कारी। मधुरी नैन विलोकनि न्यारी, मोरे हिय बिच भाई॥ अरस परस गलबाहीं दीने, चितवत सखिन मधुर रँग भीने। छबि अरुझाय सबनि वस कीने, मंजुलता बलि जाई ॥ ५ ॥

रागिनी कान्हरा ( ताल धीमा )

लखु सजनी रामा राम को। रूप लवनता धाम को॥
जो आनन्द सिन्धु सीकर ते। तोषत लोक तमाम को॥
जो ध्यावे सो मोद समावे। नित्य सुआठो याम को॥
मंजुहिये अस जानि चहै नित। महल टहल विश्राम को॥

दोहा

आली सैन निकुंज की, विनय सुनाई आय।
दृगन कछुक आलसझलक, लखिसखि चलीं लिवाय॥
सय्या सौंज सँवारि अलि, पिय प्यारी पधराय।
दूध अधौटा मधुर सुठि, अर्पहिं अरु सब गाय॥ ८॥

देस ( ताल धीमा )

हे अलि हिय सिय पियहिं बसाओ ॥ टेक॥
बैठे रतन जटित पलँगा पर, चँवर सुछत्र सजाओ।

Scanned by CamScanner

प्यार भरी मनिमय गिलास पय, सखियन अधर लगाओ ॥
पान करत दोउ प्रीति रीति पगि, पावनि रहसि बढ़ाओ।
मंजु मनोहर रहसि माधुरी, अरुझनि पर वलि जाओ॥६॥

देश का दूसरा भेद

सखी साँचो सुख इहै युगल छवि, ध्यावना रे ॥टेक॥
पय पवाय अलि पान पवावें, अँतरलाय फुल माल सजावें। अपर गाय छवि लखहिं मनोरम, भावना रे॥ पिय प्यारी अंसन भुज धारी, रसमय वैन सैन अनुसारी, प्रीतम सिय के चिबुक परसि वलि, जावना रे ॥ निरखहिं छवि सखियाँ तृन तोरी, हृदय गुनहिं निज भाग अथोरी, मंजु हिये धरि सजहु नेह सुठि, पावना रे ॥ १० ॥

चौपाई

आलस दरसत दृगन बिचारी।
अलिन मंजु आरती उतारी॥
पुनि परदा गिराय चहुँ धारी।
दम्पति भूषण कछुक उतारी॥ ११ ॥
सुभग सेज पौढ़े पिय प्यारी।
मंजु पलोटति चरन सुखारी॥
अपर मधुर वीनादि बजाई।
गावहिं मधुर राग सुखदाई॥ १२॥

Scanned by CamScanner

देश ताल धीमा

देखहु सुभग सेज पिय प्यारी ॥ टेक ॥
जटित कनक मनि पलँग मनोहर, स्रग सुगन्ध चहुँ धारी ।
सुभग सुरभि पय फेन सरिस मृदु, विपुल सुपेति सँवारी ॥
उपवरहन वर बरनि न जाहीं, रतन दीप उँजियारी ।
ऊपर रुचिर चाँदनी तानी, मुक्तन झालर दारी ॥
चहुँदिसि मंजु मनिन मय सीमन,सरस चित्र मनहारी ॥१३

दोहा

आलस महँ लखि मंजु अलि, भोग सौंज दुहुँ धारि ।
साजि आय समुदाय में, मधुर सु राग उचारि ॥१४॥

देश का दूसरा भेद

ऐ सुनिये री सहेलिया अबना, बोलना रे ॥ टेक ॥
देखु याम युग बींती रजनी, आलस से सिय पिय दृग झँपनी । अब सब साज समेटि चलो लै, टोलना रे ॥
नूपुर दाबि चलो मोरि सजनी, कटि किंकिनी होंय नहिं बजनी । मिलि कंकन नहिं बजहिं बिलग ह्वै, डोलना रे ॥ जाहु सकल निज थलन विराजो, जँगलन छवि लखि

दृग सुख साजो मंजुलता अब होय भोर पट, खोल
नारे ॥ १५ ॥

इति श्रीमंजुरसाष्टयामे निशाऽऽदौ द्वितीयप्रहरकैङ्कर्यं वर्णने सप्तमोयामः ॥ ७ ॥

## * अथ अष्टमोयामः *

दोहा

लागि झरोखन लखत अलि, दम्पति छबि रस वासि ।
दृगन लाहु सोइ सुख लहहिं, सिय पिय आनंद रासि ॥ १ ॥
जाकी श्रद्धा प्रीति जहँ, रहे सोई होय जाय ।
गीता में श्रद्धहिं[१] लखो, श्रुति सिद्धान्त[२] लखाय ॥ २ ॥
सिय पिय की सखि अंगजा, कबहूँ बिलग न जोय ।
ते सब सौंज सँवारहीं, सैन समय जो होय ॥ ३ ॥
दम्पति सोये जानि अलि, मंजु सुछबि हिय लाय ।
सेव चरन आचार्य अरु, रसाचार्य गृह जाय ॥ ४ ॥
वन्दि सुआसिष पाय निज, कुञ्ज सेज पर आय ।
सैन करहिं अलिमंजु यह, यक दिन की कछु गाय ॥ ५ ॥

---

नोट—१—'योयच्छ्रद्धः स एव सः' ( गीता अ० १७–३ )
नोट—२—श्रुतिः 'ब्रह्म वेदब्रह्मैव भवति' ( मु० ३–२–६ )

परम गोप्य सिय पिय रहसि, गुनिय धरिय हिय कंजु।
प्रगटत अन अधिकार प्रति, हानि होत रस मंजु ॥ ६ ॥
सेवा आठो याम की, जिमि गुरु जन निरधार।
तदनुसार वरन्यों कछुक, निज लघु मति अनुसार ॥ ७ ॥
यहि विधि नित अनुसरहिं जे, राम नाम जप संग।
गुरु जन आसिष ते सदा, लहहिं मंजु रस रंग ॥ ८ ॥

इति श्रीमंजुरसाष्टयामे निशान्ते प्रथमप्रहरकैङ्कर्यवर्णने अष्टमोयामः ॥ ८ ॥

प्रार्थना ( राग नट )

सो दिन आइहैं कब फेरि।
नित विलास विलोकिहौं पिय संग प्रकृति निवेरि ॥
अलिन सहित जगाय सिय पिय साज मंगल जेरि।
आरती करि भोग वल्लभ देखिहौं दृग देरि ॥
विविध विधि नहवाय साजि सिंगार आरति फेरि।
पितुहिं पिय सियमातु मिलि संग छबि कलेऊ हेरि ॥
लखब चौपड़ खेल दम्पति छबि सु भोजन केरि।
सैन भवन पलोटि पग छबि लखब लेटि सुनेरि ॥
उठि जगाय सुकुञ्ज केलि अनेक हिये चितेरि।
साजि राज सिंगार दोल झुलाइ फेरा फेरि ॥
पितु सभा पिय जाय सिय बैठकहिं वहँ लौटेरि।

Scanned by CamScanner

वाटिका लखि चङ्ग संग नहाय सरि पुलिनेरि ॥
सजि सिंगार सिंगारि आरति निरखि छबि रासेरि ।
भिन्न-भिन्न रु मंडलाकृति नटब दम्पति घेरि ॥
रङ्ग महल कराय ब्यारू करब सँग सब चेरि ।
सयन छबि लखि सेइ पग दम्पति रहसि दग गेरि ॥
सेइ पग गुरु जन सु कुञ्जन आइ कुञ्ज निजेरि ।
लेटिहौं हिय राखि दम्पति मंजु विहरनि ढेरि ॥ १ ॥

दोहा

सम्वत सर वसु ग्रह सुविधु, आद्र नौमि असि तेरि ।
चित्रकूट सिय हृद लिख्यों, मन्दाकिनि पुलिनेरि ॥

## ❀ इति शुभम् ❀

॥ श्रीसीतारामार्पणमस्तु ॥

Scanned by CamScanner

# अथ शरीर-विवरण

## स्थूल—शरीर—प्रकरण

स्थूलशरीर चौबीस तत्वों के व्यापार से रहता है। यथा-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु. आकाश अहंकार, महत्तत्व, प्रकृति ( अष्टधा प्रकृति ); श्रोत्र, त्वक् , नेत्र, रसना, घ्राण ( पाँच ज्ञानेन्द्रिय ); वाक् , पाणि, पाद, शिश्न, गुदा ( पाँच कर्मेन्द्रिय ); मन, और शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध ( पाँच विषय );=२४ हुए। प्रमाण—"महाभूतान्यहङ्कारो बुद्धिरव्यक्तमेव च। इन्द्रियाणि दशैकञ्च पञ्च चेन्द्रियगोचराः ॥" ( गीता अ० १३ );

इस शरीरके साथ वैखरी वाणी रहती है। वाणी-यथा—"नाभिहृत्कण्ठजिह्वोत्थाश्चतस्रः क्रमतो गिरः। परा तथा च पश्यन्ती मध्यमा वैखरी च ताः ॥ श्रीसीतारामयोस्तत्त्वं वर्णनं सा परा भवेत्। याथात्म्य जीवतत्वञ्च पश्यन्ति कथयेत्तदा ॥ स्वर्गार्थधर्मकामादीन् वर्णयेत्सा तु मध्यमा। व्यवहारे वैखरी प्रोक्ता केवलं यच्च प्राकृतम् ॥" ( जिज्ञासा पञ्चके ); इस प्रमाण के अनुसार इस वैखरी वाणी का स्थान जिह्वा है और व्यवहार सम्बन्धी बातों का कहना कार्य है।

पुनः इसी के साथ जाग्रत् अवस्था भी रहती है। यथा—"श्रोत्रादि ज्ञानेन्द्रियैश्शब्दादिविषयं ज्ञायत इति जाग्रदवस्था" ( तत्वबोधे ) अर्थात् इसमें शब्दादि विषयों का ज्ञान होता है।

Scanned by CamScanner

इससे यह सत्त्वगुण-प्रधान कहाती है। इसमें जीव जगत् के साथ व्यवाहार युक्त रहता है इसीसे इस (जीव) की विश्व संज्ञा होती है। यथा –"यो यच्छ्रद्धः स एव सः" (गीता अ. १७); इस अवस्था के विभु भगवान् विराट् हैं अर्थात् जगत् की ममता में सने हुए विश्व संज्ञक इस जीव केलिये भगवान् अपने विराट् रूप से ज्ञान कराते हैं कि जगत् हमारा ही शरीर है तो उसके किये हुए उपकार (ऋणत्रय आदि के) हमारे ही हैं। तब जीव जगत् से मुंह मोड़कर जड़-चेतन रूपसे रक्षक प्रभु को जान उन्हीं की ओर लगता है। यथा -"जानिय तबहिं जीव जग जागा। जब सब विषय विलास बिरागा॥" (रामचरितमानसे); यही पारमार्थिक जाग्रदवस्था है। उपर्युक्त सत्त्व प्रधानता इस पक्ष में यों है कि, जीव का सत्सङ्गादि के निमित्त केवल जगत् के सात्त्विकांश ही से सम्बन्ध रहता है।

इस अवस्था के विश्वसंज्ञक जीव के नियामक श्रीलक्ष्मण जी हैं। यथा—श्रुतिः—"अकाराक्षरसम्भूतः सौमित्रिर्विश्व-भावनः" (श्रीरामतापनीये); अर्थात् श्रीलक्ष्मणजी समष्टि में जाग्रदवस्थाभिमानी होते हुये, व्यष्टि जीवों के नियामक (संचालक) हैं।

अतः उपर्युक्त विभु द्वारा जब जाना कि जड़ चेतन रूप से भगवान् का ही पाला यह शरीर है और उनका अंश (भाग) होने से उनके लिये ही रहना चाहिये तो यह श्री लक्ष्मणजी के आचरण से जाने कि जैसे उन्होंने वनयात्रा के समय किया।

Scanned by CamScanner

यथा—"गुरु पितु मातु न जानौं काहू। ...मोरे सबुइ एक तुम स्वामी ॥" (रामचरितमानस); यहाँ गुरु से धर्मगुरु का तात्पर्य है। ऐसा कह ऋणत्रयभार त्यागकर बन-बन में प्रभु-सेवा-परायण रहे, वैसे जीव के लिये जगत् के सात्विकांश रूप बन में, वनवासी श्रीसीतारामजी की तरह भगवान् अर्चारूप से प्राप्त रहते हैं। तो इसे भी श्रीसुमित्राजी से उपदिष्ट श्रीलक्ष्मणजी की तरह अपने को भूरि-भाग्य-भाजन मानता हुआ कैङ्कर्य परायण रहना अर्थात् नवधा भक्ति करना चाहिये; यही इस अवस्था का उपाय है।

## सूक्ष्म--शरीर–प्रकरण

सूक्ष्म-शरीर सत्रह तत्वों के ही व्यापार से रहता है। यथा—"पञ्चप्राणमनोबुद्धिदशेन्द्रियसमन्वितम्। अपञ्चीकृतम-स्थूलं सूक्ष्माङ्गं भोगसाधकम् ॥" ( जिज्ञासा पञ्चके ); अर्थात प्राण, अपान, समान, उदान, और व्यान ( पाँच प्राण ) मन, बुद्धि तथा १० इन्द्रियाँ, यही १७ हुये। इसके साथ मध्यमावाणी रहती है जिसका उत्थान कंठ से होता है और अर्थ, धर्म, काम, एवं स्वर्गादि का वर्णन कार्य है।

इस शरीर की स्वप्नावस्था है। यथा—"जाग्रदवस्थायां यद्दृष्टं यच्छ्रुतं च तत्तज्जनितवासनया निद्रा समये यः प्रपञ्चः प्रतीयते सा स्वप्नावस्था। सूक्ष्म शरीराभिमानी तैजसात्मा उच्यते ॥" ( तत्वबोध प्रकरणे ); अर्थात् जाग्रत् अवस्था में

जो-जो देखा सुना होता है उसी-उसी वासना से स्वल्प-निद्रा में जो प्रपंच की प्रतीति होती है वह स्वप्नावस्था है। इसमें पूर्व जन्म के भी संस्कार रहते हैं। यह रजोगुण प्रधान है क्योंकि, इसमें राजस अहंकार ( मन ) की प्रबलता रहती है। इसी राजसाहं की तैजस भी संज्ञा है अतः इनमें तन्मय जीवात्मा की भी तैजस संज्ञा होती है और इसका विभु हिरण्यगर्भ (ब्रह्मा) है।

परमार्थ पक्ष में अवस्थायें क्रमशः उत्तरोत्तर प्रशस्त हैं अतः उपर्युक्त जाग्रत् होने पर जगत्-सम्बन्ध रहित एकान्त में बैठे-बैठे भी पूर्वावस्था के सांसारिक व्यवहारों में मन बलात् संकल्प विकल्प करता हुआ ( स्वप्न की सी ) बाधाएं पहुँचाता रहता है। यथा—"सर्ग नरक चर अचर लोक बहु बसत मध्य मन तैसे ॥" ( विनय ); अतः इस अवस्था में राजसाहं ( मन ) के द्वारा तत्सम्बंधी जगत् रणोगुण परिणाम रूप से घृणित भासता है और साधक बारंबार उद्विग्न हो-हो कर रक्षा चाहता है। मन की विपरीतता का कारण प्रारब्ध कर्म है और कर्म का मूलाधार अग्नि अर्थात् तेजस् है। इससे भी उसमें तन्मय जीवात्मा तैजस् कहाता है।

इस तैजसात्मा के नियामक श्री शत्रुघ्न जी हैं। यथा श्रुति—"उकाराक्षर-सम्भूतः शत्रुघ्नस्तैजसात्मकः ॥" ( श्रीराम तापनीये ); अतः श्रीशत्रुघ्नजी की तरह, भरतजी के सम विवेकी की सेवा और सत्सङ्ग द्वारा, प्रेमाभक्ति करना चाहिये। यही इस अवस्था का उपाय है ॥

Scanned by CamScanner

# कारण--शरीर--प्रकरण

कारण शरीर वासनामय है। इसकी तमोगुण प्रधान सुषुप्ति अवस्था है। तम-यथा—"तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्व-देहिनाम्। प्रमादालस्य निद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत॥" ( गीता अ० १४ ); अतः घोरनिद्रा इसका स्वरूप है यथा—सुखमहम-स्वाप्सम् न किंचिदवेदिषम् तथा—अहंकिमपि न जानामि सुखेन मया निद्राऽनुभूयत इति सुषुप्त्यवस्था कारण शरीराभिमानी-आत्मा प्राज्ञ उच्यते॥" ( तत्वबोधे ); अर्थात् घोर निद्रा से जागने पर "मैं सुख पूर्वक सोया था और कुछ नहीं जानता" यह प्रतीति, एक सुख के अनुसंधाता को सिद्ध करती है। जो बुद्ध्यादि से परे है, क्योंकि बुद्धि आदि तो घोर निद्रा में लीन थीं। अतः यह प्रत्यक् संज्ञक जीवात्मा है। यथा—"स्वस्मै स्वे-नैवावभासनात्वंप्रत्यक्त्वम्।" ( विशिष्ठाद्वैत सिद्धान्तसार ); अर्थात् जो स्वयं अपने को जाने ( ज्ञानांतर की अपेक्षा नहीं ) वह प्रत्यक् है। अतः यह स्वतः ज्ञान स्वरूप है एवं ज्ञानधर्मी भी है। इसी से इस अवस्था की वाणी पश्यन्ती है जिसका कार्य याथात्म्यजीवतत्व का वर्णन है और उत्थान स्थल हृदय है, क्योंकि उपर्युक्त विचार हृदय में ही होता है। इस अवस्था में जीव ने प्रज्ञा ( बुद्धि ) बिना उसका कार्य स्वयं किया इसी से इसकी प्राज्ञ संज्ञा हुई। इस प्राज्ञ का विभु ईश्वर ( शिव ) है, क्योंकि यह अवस्था तमोगुण प्रधान है। शिवजी जगत् के तामसांश (भूत, प्रेत, सर्प, बिच्छू आदि का संग, भाँग, धतूरादि

Scanned by CamScanner

का सेवन, चिताभस्मादि लेपन, मुण्डमाल-धारण आदि ) से संग ( दृष्टि ) होते हुए. ऐसे निर्लिप्त रहते हैं कि उनका विकार स्पर्श भी नहीं कर पाता प्रत्युत आनन्द स्वरूप रहते हैं। वैसे यह प्राज्ञ जीव भी जगत् को तमोगुण मय देखता हुआ उससे ऐसो निर्लिप्त रहता है कि जैसे घोर निद्रा में जगत् का भान नहीं रहता। इस से यह भी आनन्द स्वरूप रहता है।

इस प्राज्ञात्मक जीव के नियामक श्रीभरतजी हैं। यथा—श्रुतिः—"प्राज्ञात्मकस्तु भरतो मकाराक्षर-सम्भवः।" ( श्रीराम तापनीये ); अतः जैसे श्रीभरतजी ने माता का इच्छित राज्य त्यागकर चौदह वर्ष तक विवेक पूर्णता सहित श्रीसीताराम से स्नेह किया वैसे प्रकृति-परिणाम-देह की चौदह इन्द्रियों ( ११ इन्द्रिय और तीन अन्तःकरण ) की ईहा (प्राकृत विषय चेष्टा) से विमुख रखते हुए श्रीसीताराम से स्नेह करना चाहिये अर्थात् अनुरागरूपी गहरी निद्रा में सोना चाहिये, यही इस अवस्था का उपाय है।

## उपसंहार

उपर्युक्त तीनों शरीरों और अवस्थाओं से मुक्त होकर जीव आनन्द पूर्ण शुद्ध सत्त्वमय तुरीयावस्था में प्राप्त होता है तो इसकी बृत्ति जगत् के सम्यक् प्रकार से रहित होकर श्रीसीताराम तत्त्व पर ही रहती है इसी अवस्था से श्रीसीतारामजी की शुद्ध मानसिक भावना होती है। इस अवस्था में परावाणी रहती है

Scanned by CamScanner

जिसका नाभि से उत्थान होता है और श्रीसीताराम तत्व वर्णन कार्य है। प्रमाण—यथा -"मगन ध्यान रस दण्ड युग, पुनि मन बाहर कीन। रघुपति चरित महेश तब, हर्षित बरनैं लीन॥" "हिय सुमिरी सारदा सुहाई। मानस ते मुख पंकज आई॥" (रा० च० मानस) यही सिद्धावस्था है। इसमें प्राप्त हो, देह त्याग होने पर जीव नित्य धाम में श्रीसीतारामजी का शेषत्व पाकर कृतार्थ होता है।

## अथ श्री राममन्त्रार्थ सूक्ष्म

१+२+३ ५ / ४+६

रां रामाय[४] नमः इस प्रकार ५ अथवा ६ पद हुये। तिनमें 'रां' को पृथक्-पृथक् करने पर र[१] + अ[२] + म्[३] तीन हुए। प्रथम पद 'र'[१] अव्यक्तचतुर्थ्यात्मक है, क्योंकि इसका विवरण 'रामाय'[४] है, उसमें चतुर्थी (आय रूप में) प्रकट है, ऐसे ही 'अ'[२] का विवरण 'न'[५] और 'म्'[३] का 'मः'[६] है। इस प्रकार 'र'[१] के आगे अव्यक्त चतुर्थी 'आय' लगाने से 'राय' हुआ। र के अर्थ से श्रीरामजी हुए। यथा—'रश्च रामेऽनिले बन्हौ' (एकाक्षर कोष); और 'आय' का अर्थ—के लिये (वास्ते) हुआ। अतः 'र'[१] का अर्थ 'श्रीरामजी के लिये' यह हुआ।

'अ'[२] का अर्थ एव='ही' हुआ।

Scanned by CamScanner

३ 'म्' का अर्थ 'जीव' होता है, क्योंकि कवर्गादि वर्णों में म पचीसवाँ है और जीव ही चौबीस तत्वों के देह से परे है। म् विन्दु रूप है वैसे ही जीव भी अणु स्वरूप है, यथा श्रुति— 'एषोऽणुरात्मा चेतसा वेदितव्यः' ( कठोपनिषत् ); तथा जीव सच्चिदानन्द स्वरूप है, यथा—"ईश्वर अंस जीव अविनासी। चेतन अमल सहज सुखरासी॥" ( मानस रा० ); यहाँ चेतन से 'चित्' और अमल से विकार रहित एकरस = 'सत्' तथा सहज सुखराशि से 'आनन्द' स्वरूप कहा गया है। वही 'म्' से सिद्ध होता है, यथा—'मसी—परिमाणे से 'सत्' मन-ज्ञाने से 'चित्' और मदि-हर्षे से 'आनन्द' हुआ।

अतः रां वीज का समुच्चार्थ हुआ कि 'जीव श्रीरामजी के लिये ही' है। जो जिसके लिये होता है वह उसका शेष कहाता है। जीव को ऐसे ही गीता में भी कहा है—"ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः" ( अ० १५ ); यहाँ अंश का अर्थ भाग (हिस्सा) है, यथा—'अंशस्तु भाग वंटके' जो जिसका भाग होता है वह उसके लिये है। अतः बीज से जीव का श्रीराम-शेषत्व स्पष्ट हुआ।

४ रामाय में राम + आय ऐसा पदच्छेद हुआ। राम पद के अर्थ श्रीरामजी हैं, यथा—'रामशब्देनचेतनाचेतन रमयितृत्वम्' ( रहस्यत्रये ), तथा—"जीवान् श्रीरमयत्यसौ त्रिजगतां स्वानंद कारी वपुः" ( श्रीराम मन्त्रार्थे ); इसमें जीवान् से चेतन (जीव) वर्ग और श्री से अचेतन या जड़ प्रकृति का ग्रहण है। अर्थात्

Scanned by CamScanner

श्रीरामजी प्रत्येक जीव को उसके नाना प्रकार के सम्बन्धियों (माता पिता सुहृदादि) द्वारा तत्तद्रूप से पालते हैं यही उपयुक्त 'जीवान् रमयति' से हुआ. और श्री से यहाँ प्रकृति या अचेतन का ग्रहण है उसके पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाशादि में क्रमशः गंध, रस, रूप, स्पर्श, शब्दादि रूपों से जड़ पदार्थों द्वारा भी वे ही रमाते हैं यह श्री रमयति से जाना गया। अतः सब प्रकार से श्रीरामजी का पाला-पोसा देह भी उन्हीं के लिये ही रहना चाहिये। यही दिखाने के लिये राम शब्द के आगे 'आय' है जिसका अर्थ के लिये (वास्ते) है। अतः शरीर से भी उनके लिये रहे अर्थात् वाणी से कीर्तन, जप, नेत्र से दर्शन कर कैङ्कर्य आदि सब इन्द्रियों से श्रीसीताराम भजन परायण रहे।

अतः 'रामाय' का समुच्चयार्थ हुआ कि, **'जीव श्रीराम कैङ्कर्य के लिये'** है अर्थात् **तद्भोग्य** है। यथा—'देह धरे कर यह फल भाई। भजिय राम सब काम बिहाई ॥' (रा-मानसे)।

$$\frac{५}{५+६}$$

नमः यह अखंड और सखंड दो प्रकार का है। प्रथम अखंड नमः का अर्थ शरण है। प्रमाण-महाभारत में पाण्डवोंसे मार्कण्डेय-बचन है कि 'गच्छध्वं शरणं ह्येनं शरण्यं पुरुषर्षभाः' इस पर कहा है कि 'द्रौपद्या सहिता सर्वे नमश्चक्रुर्जनार्दनम्'। अतः स्पष्ट है और शरण का अर्थ उपाय है। प्रमाण—'नमः शब्देनानन्योपायत्वम्' (रहस्यत्रये); अतः उपाय वाची नमः का मंत्र के पूर्व पदों के साथ अर्थ हुआ कि, **जीव के उपाय श्रीरामजी हैं**। यथा—"यत्पादप्लव एक एवहि भवाम्भोधेस्तितीर्षावताम्" (रामचरित-मानसे)।

Scanned by CamScanner

सखण्ड होने पर न+मः ऐसा हुआ। न का अर्थ 'नहीं' है और मः षष्ठयन्त है जिसका भाषा में का, की के चिह्न हैं। अतः म वाच्य 'जीव का' यह हुआ। अतः न मः=जीव का नहीं।

अब काकाक्षिगोलकन्याय से इस सखंड नमः क्रिया को मन्त्र के प्रत्येक शब्द के साथ लगाने से :—

'रां न मः, रामाय न मः, नमो न मः' ऐसा हुआ।

रां न मः अर्थात् जीव श्रीरामजी के लिये ही हैं जीव का नहीं। यह **अनन्यशेषत्व** हुआ।

रामाय न मः=जीव श्रीरामजी का भोग्य है जीव का नहीं। यह **अनन्यभोग्यत्व** हुआ।

नमो न मः=जीवके उपाय श्रीरामजी हैं। जीव का (भरोसा) नहीं। यह **अनन्यपायत्व** हुआ।

इन्हीं तीनों अनन्यताओं को **अकारत्रयी** कहते हैं।

## अनुसंधानार्थ

उपरोक्त अकारत्रयी से जापक को इस प्रकार अनुसंधान करना चाहिये कि जब हृदय में अन्य देवता आदि का शेषत्व स्फुरित हो तो बीजार्थ-भूत अनन्य-शेषत्व का, तथा अन्य-भोग्यत्व स्फुरित होने पर रामाय के अर्थ में अनन्यभोग्यत्व का और अन्य किसी के प्रति उपाय-बुद्धि होने पर नमः के अनन्यो-पायत्व का विचार करना चाहिये।

## अर्थ पञ्चक

उपर्युक्त अर्थ के अनुसार बीज में **जीवस्वरूप**, रामशब्दार्थ में **ब्रह्मस्वरूप**, आय शब्द से **फलस्वरूप**, और नम के अर्थमें

उपायस्वरूप, दिखाया गया है और इन चारों के विपरीत (जैसे कि श्रीरामजी के अतिरिक्त शेषत्वबुद्धि, तदतिरिक्त भोग्यत्वबुद्धि आदि ) जो-जो वृत्तियाँ हों, वही-वही विरोधीस्वरूप, (पाँचवां) जानना चाहिये। इन्हीं पाँचों पदार्थों का ज्ञान समस्त वेदशास्त्रों में कहा गया है। अतः मंत्रार्थ ज्ञान से सम्पूर्ण वेदशास्त्र का ज्ञान हो जाता है। प्रमाण—

यथा— प्राप्यस्य[१] ब्रह्मणो रूपं प्राप्तुश्च प्रत्यगात्मनः[२]।
प्राप्त्युपायं[३] फलं[४] प्राप्तेस्तथा प्राप्तिविरोधि[५] च ॥
अर्थपञ्चकमेतत्तु संक्षेपेण वदामिते।
वदन्ति सकला वेदाः सेतिहासपुराणकाः।
मुनयश्च महात्मानो वेदवेदाङ्गदर्शिनः ॥ (अर्थपंचके)

श्रीसीताजी और श्रीरामजी अभिन्न हैं अतः श्रीराममन्त्र का जो अर्थ हुआ, वही महत्व श्रीजानकीजी का भी जानना चाहिये। यथा—"द्वौ च नित्यं द्विधा रूपं तत्त्वतो नित्यमेकता। राममंत्रे स्थिता सीता सीतामन्त्रे रघूत्तमः।" ( विष्णुपुराणे ); तथा श्रीसीतामन्त्र का सूक्ष्म अर्थ और श्रीराममन्त्र में नवधा सम्बन्ध (विस्तार रूप में) मेरे लिखे हुए श्रीमन्मानसनाम वंदना' नामक ग्रन्थ (श्रीवेंकटेश्वर प्रेस बम्बई) में छपा है वह भी देखें।

## अथ मन्त्रद्वयार्थ

द्वयाख्यं रामचन्द्रस्य मन्त्ररत्नमनुत्तमम्।
पञ्चविंशाक्षरं विद्वान् स याति परमांगतिम् ॥

अर्थ—द्वयमन्त्र जिसका नाम है उस श्रीरामजी के श्रेष्ठमन्त्र को समझकर विद्वान् परम गति पाता है वह पचीस अक्षर का है :—

Scanned by CamScanner

यथा—

श्रीमद्रामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये, श्रीमते रामचन्द्रायनमः॥

अर्थ—श्रीजानकीजी के सहित श्रीरामचन्द्रजी के चरणों की शरण को प्राप्त हूं, श्रीजानकीजी सहित श्रीरामजी के लिये मेरा नमस्कार है।

भावार्थ—यह श्रीरामजी की शरणागति का मन्त्र है, पचीस अक्षरों का है, इसी की मन्त्ररत्न भी संज्ञा है। रहस्यत्रय में यह दूसरा रहस्य है। प्रथम रहस्य श्रीराममन्त्रार्थ से शरणागति का महत्त्व जाना, तब शरणागति के स्वरूप का वर्णन इस मन्त्र में है श्रीमद्वाल्मीकीय के—"सभ्रातुश्चरणौ गाढं निपीड्य रघुनन्दनः। सीतामुवाचातियशां राघवं च महाव्रतम्॥" (अयो० कांड) से इसका भाव स्पष्ट है, कि वन यात्रा समय श्रीलक्ष्मण जी ने भाई श्रीरामजी के चरण दृढ़ रूप से ग्रहण करके अत्यन्त यशस्विनी श्रीसीताजी तथा महाव्रत राघव के प्रति कहा।

श्रीजानकी जी को अतियशा कहा है, क्योंकि वे चेतनों के सम्मुख करने में पुरुषकार रूपा हैं, जयन्तादि की शरणागति में इनकी पुरुषकारता स्पष्ट है। ऐसे अनन्त जीवों के प्रभु सम्मुख करने का यश इन्हें प्राप्त है। इनकी कृपा से श्रीलक्ष्मणजी की शरणागति स्वीकृत हुई।

इसीलिये मूल मन्त्र में 'श्रीमत' शब्द प्रथम दिया गया है जिससे समस्त जीवों की समाश्रयणीया वात्सल्यादि गुणपूर्णा श्रीजानकीजी के सहित श्रीरामजी के चरणों का ग्रहण कहा गया है। और श्री जी के सहित ही श्रीरामजी के नमस्कार अर्थात् शरणागति का विधान मन्त्र के उत्तरार्द्ध से किया गया है।

तथा श्री नारद पंचरात्रोक्त आठ अक्षरों का भी शरणागति मन्त्र है :—

यथा—श्रीरामः शरणं मम।

Scanned by CamScanner

अर्थ—श्रीजानकी जी के सहित श्रीरामजी मेरे उपाय हैं।

भावार्थ—यहाँ भी श्री के अर्थ में श्रीजानकीजी हैं और तिनके सहित राम शब्द के उपर्युक्त भाव हैं। शरण का अर्थ उपाय है। यथा— 'अनन्य साध्ये स्वाभीष्टे महाविश्वास पूर्वकम्। तदेकोपायता याञ्चा प्रपत्तिः शरणागतिः॥' (भरताचार्यः)

अर्थात् संसार से डरे हुये जीव का अन्य साधनों से अपना कार्य सिद्ध होता हुआ न देखकर और "श्रीरामचरण ही मेरे सब विधि उपाय हैं।" ऐसी याचना करना प्रपत्ति है। शरण का भी उपाय ही अर्थ स्पष्ट हुआ। यथा—"यत्पादप्लव एक एवहि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां, वन्देऽहं तमशेषकारण परं रामाख्यमीशं हरिम्॥" (रामचरित मानसे);

यह प्रपत्ति "आनुकूल्यस्य संकल्पः" आदि छः भेदों से तथा तदन्तर्गत भी बहुत भेदों से कही गई है। रहस्यत्रय आदि ग्रन्थों में लिखा है।

## चरममन्त्रार्थ

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते।
अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतं मम॥
(श्रीमद्वाल्मीकीये)

अर्थ—एक बार ही 'मैं आपका हूं' इस प्रकार दीन होकर याचने वाले सर्व प्राणियों के लिये मैं अभय देता हूँ, यह मेरा व्रत है।

भावार्थ—उपर्युक्त मन्त्रद्वय से शरणागति की विधि जान लेने पर यह शंका रह गई, कि मेरी शरणागति श्रीरामजी को स्वीकार होगी या नहीं, तो उसकी पूर्ति इस चरममंत्र से होती है कि सर्वतीर्थपति समुद्रके किनारे असंख्य वानर भालु रूप पार्षदों के समक्ष में श्रीरामजी ने अपना व्रत (प्रतिज्ञा) कहा है।

Scanned by CamScanner

'सकृत् एव' से इसमें पुनरावृत्ति का निषेध है कि जैसे शास्त्र विधि से कन्या का पाणिग्रहण एक ही बार वर करता है और आजन्म निर्वाह करता है। वैसे शास्त्र विधि से शरणागत का भगवान् निर्वाह करते हैं। वही आगे की 'ददामि' इस वर्तमान क्रिया से स्पष्ट है कि इसी जन्म की एक बार की ही प्रपत्ति से रक्षा होती है।

'प्रपन्नाय' के अनुसार दीन होगा तो हाथ जोड़ेगा ही, तो **कायिकी** प्रपत्ति 'याचते' में **वाचिकी** और दीनता एवं तवास्मि के अनुसंधान में **मानसी** शरणागति कही गई है। सब प्राणियों से अभय सबका स्वामी ही करेगा अतः 'सर्वस्यवशी सर्वस्येशानः' श्रुत्युक्त ऐश्वर्य भी अपना सूचित किया। 'सर्वभूतेभ्यः'--पंचमी विभक्ति भी है, उससे सब प्राणियों से अभय देना सूचित किया कि संसारी शत्रु, कामादि, यमराजादि से अभय देना और सब भय के भय रूप भगवान् स्वयं हैं अतः अपने से भी अभय देना जनाया। 'अभय' शब्द मोक्ष परक है, यथा-"अथसोभऽयं गतो भवति।" यह श्रुति प्रमाण है। 'मम' से स्व—सामर्थ्य भी दिखाया, कि सामान्य मनुष्य भी अपना व्रत नहीं छोड़ता तो मैं सत्य प्रतिज्ञ एवं सर्वशक्तिमान् ईश्वर हूँ, अतः मेरा व्रत खंडित नहीं हो सकता। इससे अपना सर्वशरण्यत्व दिखाया। जिससे प्रपन्न को पूर्णप्रतीति पूर्वक निर्भरता हो। इसे चरम(पराकाष्ठा) मंत्र इसीलिये कहते हैं कि इसके पीछे कुछ संदेह नहीं रहता।

मन्त्र जपने के पीछे इन (द्वितीय और तृतीय रहस्यों के अर्थ) का मनन करना चाहिये।

मुद्रकः—श्रीहनुमत् प्रेस, श्रीअयोध्याजी।

Scanned by CamScanner

# ❀ ग्रन्थकार के अन्य ग्रन्थ ❀

श्रीरामचरितमानस आदि समस्त तुलसी साहित्य पर दार्शनिक विशिष्टाद्वैत दृष्टि से सर्व-शास्त्र प्रमाणों के साथ विवेचना विविध आध्यात्मिक रहस्यमय एवं भावमय विशद व्याख्याएँ —

| | | | | मूल्य |
|---|---|---|---|---|
| १—श्रीरामचरितमानस 'सिद्धान्त-भाष्य' | | | ( पक्की चार जिल्दों में ) | ५०.०० |
| २—विनय पत्रिका | 'सिद्धान्त-तिलक' | | ( पक्की दो जिल्दों में ) | ११.०० |
| ३—दोहावली | ,, | ,, | ( सजिल्द ) | ५.०० |
| ४—हनुमान्—बाहुक | ,, | ,, | ... | १.७५ |
| ५—कृष्ण गीतावली | ,, | ,, | ... | १.२५ |
| ६—रामाज्ञा प्रश्न | ,, | ,, | ... | १.२५ |
| ७—रामलला नहछू | ,, | ,, | ... | ०.२५ |
| ८—वैराग्य सन्दीपिनी | ,, | ,, | ... | ०.५० |
| ९—बरवै रामायण | ,, | ,, | ... | ०.७५ |
| १०—पार्बती मंगल | ,, | ,, | ... | ०.५० |
| ११—जानकी मंगल | ,, | ,, | | ०.८८ |
| १२—कवितावली | ,, | ,, | सजिल्द | ३.५० |
| १३—गीतावली | ,, | ,, | .... | ७.०० |
| १४—श्रीतुलसी चरित विमर्श | ... | ... | ... | ०.८८ |
| १५—मंजुरसाष्टयाम(द्वि.सं.) | ... | .... | ... | ० ७५ |
| १६—मंजुरस पदावली | ... | ... | ... | ०.१६ |
| १७—प्रबोधरत्न मंजूषा | ... | ... | ... | ०.१६ |
| १८—प्रपत्ति-रहस्य(द्वि०सं०) | ... | ... | सजिल्द | ४.५० |
| १९—व्याख्यान-निबन्धागार | ... | ... | ... | ६.०० |
| २०—श्रीमान्मानस नाम वन्दना* | | ... | .... | ०.२० |

मिलने का पता—

**१—व्यवस्थापक :—सद्गुरुकुटी-गोलाघाट, श्रीअयोध्याजी**

२ - अयोध्या और काशी के पुस्तक-विक्रेता—

३—कार्त्तिकप्रसाद साहु, नं० १ नरकुल डाँगा मेन रोड, कलकत्ता—११

४—मानस- सत्संग--सँघ, २९३ गोपालगञ्ज, सागर ( म० प्र० )

*यह ग्रंथ खेमराज श्रीकृष्णदास, श्रीवेंकटेश्वर स्टीम प्रेस खेतवाड़ी बंबईसे मंगावें।

Scanned by CamScanner